



**Microfinance Institutions Network
(MFIN) Consolidated Coverage
Report
January 2020**

Media Coverage Index

S. No.	Publication Name	Media
Case Study: Muthoot Microfin		
1.	Dainik Jagran	Print
2.	Navbharat	Print
3.	Pradesh Watch	Print
4.	Raj Express	Print
5.	Swatantra Mat	Print
6.	Peoples Samachar	Print
7.	Jaylok	Print
8.	Digital India	Print
9.	Agniban	Print
10.	MP Hindi Express	Print
Case Study: Samasta Microfinance		
1.	Prajavahini	Print
2.	Suvarna Times	Print
3.	Kalapriya	Print
4.	Kemmugilu	Print
5.	Kranthi Ranga	Print
6.	Masthamma Vaani	Print
7.	Ramanagara Times	Print
8.	Ramanagara Varthe	Print
9.	Reshmeseeme	Print
10.	Aarambha	Print
Case Study: Unnati Microfin Private Limited		
1.	Maharashtra Times	Print
2.	Saamna	Print
3.	Punya Nagri	Print
4.	Vrutta Dinank	Print
5.	Prahaar	Print
6.	Shivner	Print
Article: Financial Independence through Microfinance		
1.	Punya Nagari	Print
2.	Samaj	Print
3.	Mahasatta	Print
4.	Lokneta	Print
5.	Kesari	Print
6.	Sattyawadi	Print
7.	Navsandesh	Print
8.	Vartahsakti	Print

9.	Kumarkranti	Print
10.	Krantisinh	Print
Article: Microfinance Crucial to Financial Inclusion		
1	Navbharat	Jabalpur
2	Raj Express	Indore
3	Digital India	Jabalpur
4	Hindi Express	Indore
5	Pradesh Watch	Jabalpur
6	Swatantra Mat	Bhopal
7	Agniban	Indore
8	Jaylok	Indore
9	Dainik Jagran	Indore
10	Navbharat	Mandla

Date	20 January, 2020
Publication	Dainik Jagran
Edition	Jabalpur, Madhya Pradesh
Page No.	11

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए सशक्त करता मुथूट माइक्रोफिन

जबलपुर, जेएनएन। मप्र के एक छोटे से गांव के बाहरी इलाके में रहने वाली पार्वती साहू की कहानी एक स्पष्ट संदेश को चित्रित करती है कि सफलता उन लोगों का अनुसरण करती है जो दृढ़ता और मेहनत से काम करते हैं। पार्वती साहू, तीस वर्ष की है और वह तीन बच्चों की मां है। अपने परिवार की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसने अपने पति के साथ मिलकर फल और सब्जियों की एक छोटी सी दुकान नजदीकी गढ़ा बाजार में 12 साल पहले शुरू की थी, लेकिन उस छोटी सी दुकान में बहुत ही कम संसाधनों के साथ, उन्हें अपने परिवार के लिए पर्याप्त आय जुटाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ रहा था। उसे मुथूट माइक्रोफिन के बारे में बताया गया और साथ ही इसमें मिलने वाली परेशानी मुक्त लोन मॉड्यूल की प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी दी गई।

Date	18 January, 2020
Publication	Navbharat
Edition	Jabalpur, Madhya Pradesh
Page No.	8

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए सशक्त करता मुथूट माइक्रोफिन



मध्यप्रदेश के एक छोटे से गाँव के बाहरी इलाके में रहने वाली पार्वती साहू की कहानी एक स्पष्ट संदेश को चित्रित करती है कि सफलता उन लोगों का अनुसरण करती है जो दृढ़ता और मेहनत से काम करते हैं। पार्वती साहू तीस वर्ष की हैं और वह तीन बच्चों की माँ हैं। अपने परिवार की मूलभूत

आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसने अपने पति के साथ मिलकर फल और सब्जियों की एक छोटी सी दुकान नजदीकी गढ़ा बाजार में 12 साल पहले शुरू की थी, लेकिन उस छोटी सी दुकान में बहुत ही कम संसाधनों के साथ उन्हें अपने परिवार के लिए पर्याप्त आय जुटाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ रहा था। अपने परिवार की बिगड़ती आर्थिक स्थिति को देखते हुए पार्वती ने एक वैकल्पिक व्यवसाय के बारे में सोचा। उसने देखा कि बाजार में उन सामानों के अधिक खरीदार आते हैं जहाँ सौंदर्य प्रसाधन और चूड़ियों जैसे उत्पाद बेचे जाते थे। इसलिए पार्वती ने फायदेमंद कारोबार के रूप में एक छोटे सौंदर्य प्रसाधन सामग्री और चूड़ियों की दुकान पर निवेश करने के बारे में सोचा। हालाँकि नया कारोबार शुरू करने के लिए पूँजी की समस्या ज्यों का त्यों बनी रही। वह स्थानीय फ़ाइनेंसरों से पैसे उधार लेने के लिए संपर्क किया लेकिन बदले में कुछ गारंटी या जमानती सुरक्षा की कमी इसमें सबसे बड़ी बाधा बनी रही। सौभाग्य से सही समय पर उसे मुथूट माइक्रोफिन के बारे में बताया गया और साथ ही इसमें मिलने वाली परेशानी मुक्त लोन मॉड्यूल की प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी दी गई।

Date	18 January, 2020
Publication	Pradesh Watch
Edition	Jabalpur, Madhya Pradesh
Page No.	2

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए सशक्त करता मुथूट माइक्रोफिन



जबलपुर, संवाददाता। जबलपुर, मध्यप्रदेश के एक छोटे से गाँव के बाहरी इलाके में रहने वाली पार्वती साहू की कहानी एक स्पष्ट संदेश को धारित करती है कि सफलता उन लोगों का अनुसरण करती है जो दृढ़ता और मेहनत से काम करते हैं। पार्वती साहू, तीस वर्ष की है और वह तीन बच्चों की माँ है। अपने परिवार की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसने अपने पति के साथ मिलकर फल और सब्जियों की एक छोटी सी दुकान नजदीकी गढ़ा बाजार में 12 साल पहले शुरू की थी, लेकिन उस छोटी सी दुकान में बहुत ही कम संसाधनों के साथ, उन्हें अपने परिवार के लिए पर्याप्त आय जुटाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ रहा था। अपने परिवार की बिगड़ती आर्थिक स्थिति को देखते हुए पार्वती ने एक वैकल्पिक व्यवसाय के बारे में सोचा। उसने देखा कि बाजार में उन सामानों के अधिक खरीदार आते हैं जहाँ सौंदर्य प्रसाधन और चूड़ियों जैसे उत्पाद बेचे जाते थे। इसलिए, पार्वती ने फायदेमंद कारोबार के रूप में एक छोटे सौंदर्य प्रसाधन सामग्री और चूड़ियों की दुकान पर निवेश करने के बारे में सोचा। हालाँकि, नया कारोबार शुरू करने के लिए पूँजी की समस्या ज्यों का त्यों बनी रही। वह स्थानीय फाइनेंसर्स से पैसे उधार लेने के लिए संपर्क किया लेकिन बदले में कुछ गारंटी या जमानती सुरक्षा की कमी इसमें सबसे बड़ी बाधा बनी रही। सौभाग्य से, सही समय पर उसे मुथूट माइक्रोफिन के बारे में बताया गया और साथ ही इसमें मिलने वाली परेशानी मुक्त लोन मॉड्यूल की प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी दी गई।

Date	22 January, 2020
Publication	Raj Express
Edition	Jabalpur, Madhya Pradesh
Page No.	11

महिलाओं को आत्मनिर्भर बना रहा मुथूट माइक्रोफिन

मुंबई। मध्यप्रदेश जबलपुर के गांव में रहने वाली पार्वती साहू की कहानी एक स्पष्ट संदेश देती है कि सफलता उन लोगों का अनुसरण करती है जो मेहनत से काम करते हैं। पार्वती साहू, तीस वर्ष की है और वह तीन बच्चों की मां है। परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसने अपने पति के साथ मिलकर फल और सब्जियों की दुकान शुरू की थी, लेकिन दुकान से आय न होने के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ती जा रही थी। जिससे पार्वती ने एक छोटे सौंदर्य प्रसाधन सामग्री और चूड़ियों की दुकान खोलने की सोची, लेकिन इसके लिए पूंजी की समस्या थी। सौभाग्य से सही समय पर उन्हें मुथूट माइक्रोफिन के बारे में बताया गया और साथ ही इसमें मिलने वाली परेशानी मुक्त लोन मॉड्यूल की प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी दी गई। पार्वती ने तुरंत 30000 रुपए का पहला लोन मुथूट माइक्रोफिन से लिया। मुथूट माइक्रोफिन ने न केवल पार्वती को लोन दिया, बल्कि उसे व्यावसायिक कौशल और वित्तीय साक्षरता पर प्रशिक्षण भी दिया, ताकि वह प्रभावी ढंग से अपने पैसे का उपयोग कर सके और अपना विकास कर सके। पार्वती की मेहनत रंग लाई और उसने पर्याप्त आय कमाना शुरू कर दिया। पार्वती ने कहा, मैं मुथूट का बहुत धन्यवाद देती हूँ कि उनकी ही सहायता से मैं परिवार को आर्थिक बेहतरी प्रदान करने में सक्षम हो सकी हूँ।

Date	18 January, 2020
Publication	Swatantra Mat
Edition	Bhopal, Madhya Pradesh
Page No.	10

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए सशक्त करता मुथूट माइक्रोफिन

भोपाल।

मध्यप्रदेश के एक छोटे से गाँव के बाहरी इलाके में रहने वाली पार्वती साहू की कहानी एक स्पष्ट संदेश को चित्रित करती है कि सफलता उन लोगों का अनुसरण करती है जो दृढ़ता और मेहनत से काम करते हैं।

पार्वती साहू तीस वर्ष की हैं और वह तीन बच्चों की माँ हैं। अपने परिवार की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसने अपने पति के साथ मिलकर फल और सब्जियों की एक छोटी सी दुकान नजदीकी गढ़ा बाजार में 12 साल पहले शुरू की थी लेकिन उस छोटी सी दुकान में बहुत ही कम संसाधनों के साथ उन्हें अपने परिवार के लिए पर्याप्त आय जुटाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ रहा था। अपने परिवार की बिगड़ती आर्थिक स्थिति को देखते हुए पार्वती ने एक वैकल्पिक

व्यवसाय के बारे में सोचा। उसने देखा कि बाजार में उन सामानों के अधिक खरीदार आते हैं जहाँ सौंदर्य प्रसाधन और चूड़ियों जैसे उत्पाद बेचे जाते थे। इसलिए पार्वती ने फायदेमंद कारोबार के रूप में एक छोटे सौंदर्य प्रसाधन सामग्री और चूड़ियों की दुकान पर निवेश करने के बारे में सोचा। हालाँकि नया कारोबार शुरू करने के लिए पूँजी की समस्या ज्यों का त्यों बनी रही। वह स्थानीय फाइनेंसर्स से पैसे उधार लेने के लिए संपर्क किया लेकिन बदले में कुछ गारंटी या जमानती सुरक्षा की कमी इसमें सबसे बड़ी बाधा बनी रही। सौभाग्य से एक सही समय पर उसे मुथूट माइक्रोफिन के बारे में बताया गया और साथ ही इसमें मिलने वाली परेशानी मुक्त लोन माइग्रूल की प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी दी गई। इस पर विचार करने के बाद पार्वती ने तुरंत 30000. रु का पहला माइक्रोफिन

लोन उधार मुथूट माइक्रोफिन से लिया। उसने जेनेरिक चूड़ियों की दुकान खोलने के लिए इस लोन का पूरा पैसा इसमें निवेश कर दिया। मुथूट माइक्रोफिन ने न केवल उसे लोन दिया बल्कि उसे व्यावसायिक कौशल और वित्तीय साक्षरता पर प्रशिक्षण भी दिया ताकि वह प्रभावी ढंग से अपने पैसे का उपयोग कर सके और अपना विकास कर सके। अंत में पार्वती की मेहनत रंग लाई और उसने इस कारोबार से पर्याप्त आय कमाना शुरू कर दिया। उसने अपने दुकान को भी विकसित किया और एक छोटी सी शुरुआत से लेकर कई तेजी से बिकने वाली चीजें भी रखनी शुरू कर दी और बाद में उसने अपनी दुकान में अपने गाँव की दो अन्य महिलाओं को भी काम करने के लिए रखा जिससे कि उन्हें उनके परिवारों को आर्थिक तौर पर सक्षम बनाने में मदद की जा सके।

Date	23 January, 2020
Publication	Peoples Samachar
Edition	Jabalpur, Madhya Pradesh
Page No.	10

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए सशक्त करता मुयूट माइक्रोफिन

जबलपुर। मध्यप्रदेश के एक छोटे से गाँव के बाहरी इलाके में रहने वाली पार्वती साहू की कहानी एक स्पष्ट संदेश को चित्रित करती है कि सफलता उन लोगों का अनुसरण करती है जो दृढ़ता और मेहनत से काम करते हैं। पार्वती साहू, तीस वर्ष की है और वह तीन बच्चों की माँ है। अपने परिवार की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसने अपने पति के साथ मिलकर फल और सब्जियों की एक छोटी सी दुकान नजदीकी गढ़ा बाजार में 12 साल पहले शुरू की थी, लेकिन उस छोटी सी दुकान में बहुत ही कम संसाधनों के साथ, उन्हें अपने परिवार के लिए पर्याप्त आय जुटाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ रहा था।

Date	18 January, 2020
Publication	Jaylok
Edition	Jabalpur, Madhya Pradesh
Page No.	1

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए सशक्त करता मुथूट माइक्रोफिन

जबलपुर (एस) । जबलपुर, मध्यप्रदेश के एक छोटे से गाँव के बाहरी इलाके में रहने वाली पार्वती साहू की कहानी एक स्पष्ट संदेश को चित्रित करती है कि सफलता उन लोगों का अनुसरण करती है जो दृढ़ता और मेहनत से काम करते हैं। पार्वती साहू, तीस वर्ष की है और वह तीन बच्चों की माँ है। अपने परिवार की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसने अपने पति के साथ मिलकर फल और सब्जियों की एक छोटी सी दुकान नजदीकी गढ़ा बाजार में 12 साल पहले शुरू की थी, लेकिन उस छोटी सी दुकान में बहुत ही कम संसाधनों के साथ, उन्हें अपने परिवार के लिए पर्याप्त आय जुटाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ रहा था। अपने परिवार की बिगड़ती आर्थिक स्थिति को देखते हुए पार्वती ने एक वैकल्पिक व्यवसाय के बारे में सोचा। उसने देखा कि बाजार में उन सामानों के अधिक खरीदार आते



हैं जहाँ सौंदर्य प्रसाधन और चूड़ियों जैसे उत्पाद बेचे जाते थे। इसलिए, पार्वती ने फायदेमंद कारोबार के रूप में एक छोटे सौंदर्य प्रसाधन सामग्री और चूड़ियों की दुकान पर निवेश करने के बारे में सोचा। हालाँकि, नया कारोबार शुरू करने के लिए पूँजी की समस्या ज्यों का त्यों बनी रही। वह स्थानीय फाइनैसर्स से पैसे उधार लेने के लिए संपर्क किया लेकिन बदले में कुछ गारंटी या जमानती सुरक्षा की कमी इसमें सबसे बड़ी बाधा बनी रही।

Date	19 January, 2020
Publication	Digital India
Edition	Jabalpur, Madhya Pradesh
Page No.	5

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए सशक्त करता मुथूट माइक्रोफिन

नई दिल्ली। मध्यप्रदेश के जबलपुर में एक छोटे से गाँव के बाहरी इलाके में रहने वाली पार्वती साहू की कहानी एक स्पष्ट संदेश को चित्रित करती है, कि सफलता उन लोगों का अनुसरण करती है जो दृढ़ता और मेहनत से काम करते हैं। पार्वती साहू, तीस वर्ष की है और वह तीन बच्चों की माँ है। अपने परिवार की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसने अपने पति के साथ मिलकर फल और सब्जियों की एक छोटी सी दुकान नजदीकी गढ़ा बाजार में 12 साल पहले शुरू की थी, लेकिन उस छोटी सी दुकान में बहुत ही कम संसाधनों के साथ, उन्हें अपने परिवार के लिए पर्याप्त आय जुटाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ रहा था। अपने परिवार



की बिगड़ती आर्थिक स्थिति को देखते हुए पार्वती ने एक वैकल्पिक व्यवसाय के बारे में सोचा। उसने देखा कि बाजार में उन सामानों के अधिक खरीदार आते हैं जहाँ सौंदर्य प्रसाधन और चूड़ियों जैसे उत्पाद बेचे जाते थे। इसलिए, पार्वती ने फायदेमंद कारोबार के रूप में एक छोटे सौंदर्य प्रसाधन सामग्री और चूड़ियों की दुकान पर निवेश करने के बारे में सोचा। हालाँकि, नया कारोबार शुरू करने

के लिए पूँजी की समस्या ज्यों की त्यों बनी रही। उसने स्थानीय फाइनेंसर्स से पैसे उधार लेने के लिए संपर्क किया, लेकिन बदले में कुछ गारंटी या जमानती सुरक्षा की कमी इसमें सबसे बड़ी बाधा बनी रही। सौभाग्य से, सही समय पर उसे मुथूट माइक्रोफिन के बारे में बताया गया और साथ ही इसमें मिलने वाली परेशानी मुक्त लोन मॉड्यूल की प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी दी गई।

Date	23 January, 2020
Publication	Agniban
Edition	Jabalpur, Madhya Pradesh
Page No.	10

आत्म निर्भर बनती महिलाएं

जबलपुर। मध्यप्रदेश के एक छोटे से गांव के बाहरी इलाके में रहने वाली पार्वती साहू की कहानी एक स्पष्ट संदेश को चित्रित करती है कि सफलता उन लोगों का अनुसरण करती है जो दृढ़ता और मेहनत से काम करते हैं। पार्वती साहू, तीस वर्ष की है और वह तीन बच्चों की माँ है। पार्वती ने फायदेमंद कारोबार के रूप में एक छोटे सौंदर्य प्रसाधन सामग्री और चूड़ियों की दुकान पर निवेश करने के बारे में सोचा। नया कारोबार शुरू करने के लिए पूँजी की समस्या दूर करने मुथूट माइक्रोफिन पार्वती ने तुरंत 30000 का पहला माइक्रोफिन लोन (उधार) मुथूट माइक्रोफिन से लिया। उसने जेनेरिक चूड़ियों की दुकान खोलने के लिए इस लोन का पूरा पैसा इसमें निवेश कर दिया। मुथूट माइक्रोफिन ने न केवल उसे लोन दिया, बल्कि उसे व्यावसायिक कौशल और वित्तीय साक्षरता पर प्रशिक्षण भी दिया, ताकि वह प्रभावी ढंग से अपने पैसे का उपयोग कर सके और अपना विकास कर सके।

Date	20 January, 2020
Publication	MP Hindi Express
Edition	Jabalpur, Madhya Pradesh
Page No.	5

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए सशक्त करता मुथूट माइक्रोफिन

मुथूट माइक्रोफिन लिमिटेड (एमएमएल), मुथूट पप्पाचन समूह (एमपीजी) का एक हिस्सा है। एमपीजी एक प्रमुख व्यावसायिक समूह में से एक है, जो कई क्षेत्रों में कार्य कर रही है। मुथूट माइक्रोफिन



लिमिटेड एक अग्रणी माइक्रोफाइनेंस संस्थान है जिसने भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में मुख्य रूप से महिला ग्राहकों को सूक्ष्म ऋण प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित किया है। कंपनी माइक्रोफाइनेंस के संयुक्त देयता समूह (जेएलजी) मॉडल का अनुसरण करती है। ग्राहकों को ऐसी

चार से दस महिलाओं के समूह में संगठित किया जाता है, जो समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों से हैं, और जो ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों या शहरी झुग्गियों में रह रही हैं। कंपनी का माइक्रोफाइनेंस ऑपरेशन्स को महिलाओं और समावेशी विकास के बीच उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन किया गया है। संस्था सूक्ष्म ऋणों के माध्यम से वित्तीय सहायता प्रदान करती है, जैसे कि छोटे व्यवसायों से जुड़ी महिलाओं को आय सृजन ऋण प्रदान करना।

Date	18 January, 2020
Publication	Prajavahini
Edition	Harohalli, Bengaluru
Page No.	5

ಸಹಾಯ ಮಾಡಿದ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್

• ಪ್ರಜಾವಾಹಿನಿ ಈಶಕಪುರ ಕಾರೋಣ್ಣ

ಮನೆಯ ಯಜಮಾನನಿಲ್ಲದೆ ಬಡತನ ದಲ್ಲಿದ್ದು, ಕುಟುಂಬ ಮತ್ತು ಮಕ್ಕಳ ಪೋಷಣೆ, ಶಿಕ್ಷಣದ ಜವಾಬ್ದಾರಿ ಹೊತ್ತ ಮಹಿಳೆಗೆ ಹಣಕಾಸಿನ ನೆರವು ಸಿಕ್ಕಿದರೆ ಹೈನೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಕುಟುಂಬದ ಜೊತೆಗೆ ನೆಮ್ಮದಿಯ ಜೀವನ ಸಾಗಿಸಬಹುದು ಎಂಬುದಕ್ಕೆ ಶಿವರತ್ನಮ್ಮ ಅವರ್ತಪ್ರಾಯವಾಗಿ ಕಾಣುತ್ತಾರೆ, ಶಿವರತ್ನಮ್ಮ ಹಾರೋಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿರುವ 38 ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ ಮಹಿಳೆ. ಒಬ್ಬ ಸ್ವತಂತ್ರ ಗೃಹಿಣಿಯಿಂದ ಒಬ್ಬ ಉದ್ಯಮಿಯಾದ ಆಕೆಯ ನಿರ್ಧಾರ ಮತ್ತು ಹೋರಾಟದ ಕಥೆಯು ಆದರ್ಶಪ್ರಾಯ ಮತ್ತು ಪ್ರೇರಣೆ ನೀಡುತ್ತಿದೆ. ಸುಮಾರು ಎಂಟು ವರ್ಷಗಳ ಹಿಂದೆ, ಶಿವರತ್ನಮ್ಮ ಅವರ ಪತಿ ಹೊಟ್ಟೆನೋವಿನಿಂದ ಸಾವನ್ನಪ್ಪಿದ ನಂತರ ವಿರಳತೆಗಳನ್ನು ಕಂಡಿತು. ಆಕೆ



ಮತ್ತು ಆಕೆಯ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಸಾಕುವ ಜವಾಬ್ದಾರಿ ಸಿದ್ಧರಾಗಿಲ್ಲದೆ ಹೊರುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಹಣಕಾಸಿನ ಸ್ಥಿತಿಯ ಒತ್ತಡದಲ್ಲಿ ಸಿಲುಕಿದರು. ಅವರ ಪತಿ ನಿಧನರಾದ ನಂತರ, ಕುಟುಂಬದ ಪೋಷಣೆಗಾಗಿ ರೇಷಿಯನ್ ಸಾಕಾಣಿಕೆ ಯಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡರು, ಆದರೂ, ಇದರಿಂದ ಬರುತ್ತಿದ್ದ ಆದಾಯವು ದೈನಂದಿನ ವೆಚ್ಚ ಸರಿದೂಗಿಸಲು ಸಾಕಾಗುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ. ಅವರ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿ ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು, ಅವರು

ತಮ್ಮ ಗ್ರಾಮದ ಸ್ವ-ಸಹಾಯ ಗುಂಪಿ ನಿಂದ ಸಾಲ ಪಡೆದುಕೊಂಡು, ಹಾಲು ಕೊಡುವ ಹಸುವೊಂದನ್ನು ಖರೀದಿಸಿದರು. ಹಾಲು ಮಾರಾಟದಿಂದ ಅವರ ಸ್ಥಿತಿಯು ಉತ್ತಮಗೊಂಡಿತು, ಆದರೆ ಸಮರ್ಪಕವಲ್ಲದ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ಅವರ ಉದ್ದಿಮೆ ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗಲಿಲ್ಲ. ಎಲ್ಲಾ ನಿರಾಶೆ ತಡೆದು ಕೊಂಡು ತಮ್ಮ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿ ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ನಿರ್ಧರಿಸಿದರು ಮತ್ತು ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ಗೆ ಅವರಿಗೆ ಗೊತ್ತಿರುವ ಒಬ್ಬರು ಅವರನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸಿದರು. ಅವರ ಸಹಕಾರ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹದಿಂದ ಸಾಲ ಪಡೆದು, ಹೈನೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮರುಪಾವತಿಸುವ ನೆರವಿನೊಂದಿಗೆ, ಅವರು ತಮ್ಮ ಉದ್ದಿಮೆ ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಯಿತು. ಇಂದು ಅವರು

ಸಾಲು ಹಸು ಹೊಂದಿರುವರು ಮತ್ತು ತಿಂಗಳಿಗೆ ರೂ.20,000 ಗಳಷ್ಟು ಆದಾಯ ಕೈಕುಂಪಾ ಗಳಿಸಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದರು.

ಈಗ ಅವರು ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಗೌರವಾನ್ವಿತ ಜೀವನ ನಡೆಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ ಮತ್ತು ಮಾಸಿಕ ಕಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಅವರ ಇಬ್ಬರೂ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಶಿಕ್ಷಣ ಕೊಡಿಸುವಲ್ಲಿಯೂ ಯಶಸ್ವಿ ಯಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಅವರ ಆಗತ್ಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಆಕೆಯಂತಹ ಹಲವು ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ನೆರವು ನೀಡಿದ್ದಕ್ಕಾಗಿ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ಗೆ ಏಕೆ ಯಾಗಿದ್ದಾರೆ ಮತ್ತು ಕೃತಜ್ಞರಾಗಿದ್ದಾರೆ, ಶಿವರತ್ನಮ್ಮ ಯಶಸ್ವಿ ಗೆ ಅವರ ಉದ್ದಿಮೆ ಸ್ಥಾಪಿಸಲು ಹಣ ಕಾಸು ನೆರವು ನೀಡಿದ ಮತ್ತು ಅವರ ಕುಟುಂಬ ಸಮರ್ಥವಾಗಿ ನಿಭಾಯಿಸಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡಿದ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ನ್ನು ನೆನದರು.

Activate Windows

Date	18 January, 2020
Publication	Suvarna Times
Edition	Harohalli, Bengaluru
Page No.	2

ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ 'ಸಮಸ್ತ' ಸಹಾಯ ಹಸ್ತ



ಕನಕಪುರ: ಸಂಸಾರದ ನೋಗ ಹೋರುವ ಯುಜಮಾನನಿಲ್ಲದೆ ಬಡ ತನದಲ್ಲಿಯೂ, ಕುಟುಂಬ ನಿರ್ವಹಣೆಯ ಜವಾಬ್ದಾರಿ ಹೊತ್ತ ಮಹಿಳೆಗೆ ಅಸರೆಯಾಗಿ ಕಿರುಹಣಕಾಸು ಸಂಸ್ಥೆಯಿಂದ ನೆರವು ಸಿಕ್ಕಿದರೆ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯಿಂದ ಹೇಗೆ ಹೈನೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಸ್ವಾವಲಂಬಿಗಳಾಗಿ ಬದುಕನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡು ಕುಟುಂಬದ ಜೊತೆಗೆ ನೆಮ್ಮದಿಯ ಜೀವನ ಸಾಗಿಸಬಹುದು ಎಂಬುದಕ್ಕೆ ಹಾರೋಹಳ್ಳಿಯ ಶಿವರತ್ನಮ್ಮ ಅದರ್ಶ ಪ್ರಾಯ.

ಅಂದ ಹಾಗೆ ಶಿವರತ್ನಮ್ಮ ಹಾರೋಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿರುವ 38 ವರ್ಷದ ಮಹಿಳೆ, ಒಬ್ಬ ಗೃಹಿಣಿಯಿಂದ ಒಬ್ಬ ಉದ್ಯಮಿಯಾದ ಅಕೆಯ ನಿರ್ಧಾರ ಮತ್ತು ಹೋರಾಟದ ಕಥೆಯು ಸಮಸ್ತ ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ಅದರ್ಶ ಪ್ರಾಯ ಮತ್ತು ಪ್ರೇರಣೆಯಾಗಿದೆ.

ಸಮಾಜ ಎಂಬ ವರ್ಷಗಳ ಹಿಂದೆ ಹೊಟ್ಟೆನೋವಿನಿಂದ ಪತಿ ಸಾವನ್ನಪ್ಪಿದ ನಂತರ ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರ ಜೀವನವು ವಿರಳತೆ ಕಂಡಿತು. ತಾನು ಮತ್ತು ತನ್ನ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಸಾಕುವ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯಿಂದಾಗಿ ಹಣಕಾಸಿನ ಒತ್ತಡದಲ್ಲಿ ಸಿಲುಕಿದರು. ಅವರ ಪತಿ ನಿಧನರಾದ ನಂತರ, ಕುಟುಂಬದ ಪೋಷಣೆಗಾಗಿ ರೇಷನ್‌ಕಾರ್ಡ್ ಸಾಕಾಣಿಕೆಯಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಕೊಂಡರು. ಆದರೂ, ಅದರಿಂದ ಬರುತ್ತಿದ್ದ ಆದಾಯವು ದೈನಂದಿನ ವೆಚ್ಚಗಳನ್ನು ಸರಿದೂಗಿಸಲು ಸಾಕಾಗುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ. ಅವರ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಅವರು ತಮ್ಮ ಗ್ರಾಮದ ಸ್ವ-ಸಹಾಯ ಗುಂಪಿನಿಂದ ಸಾಲ ಪಡೆದುಕೊಂಡು ಹಾಲು ಕೊಡುವ ಹಸುವೊಂದನ್ನು ಖರೀದಿಸಿದರು. ಹಾಲು ಮಾರಾಟದಿಂದ ಅವರ ಸ್ಥಿತಿಯು ಉತ್ತಮಗೊಂಡಿತು. ಆದರೆ, ಸಮರ್ಪಕವಲ್ಲದ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ಅವರ ಉದ್ದಿಮೆಯನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗಲಿಲ್ಲ.

ಎಲ್ಲಾ ನಿರಾಸೆಗಳನ್ನು ತಡೆದುಕೊಂಡು, ಅವರು ತಮ್ಮ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ನಿರ್ಧರಿಸಿದರು. ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ಗೆ ಅವರಿಗೆ ಗೊತ್ತಿರುವ ಒಬ್ಬರು ಅವರನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸಿದರು. ಅವರ ಸಹಕಾರ ಪೋಷಾಹದಿಂದ ಸಾಲ ಪಡೆದು, ಹೈನೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮರುಪಾವತಿಸುವ ನೆರವಿನೊಂದಿಗೆ ಅವರು ತಮ್ಮ ಉದ್ದಿಮೆಯನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಯಿತು. ಇಂದು ಅವರು ನಾಲ್ಕು ಹಸುಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿದ್ದು, ತಿಂಗಳಿಗೆ ರೂ.20,000 ಗಳಷ್ಟು ಆದಾಯ ಗಳಿಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ.

ಈಗ ಅವರು ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಗೌರವಾನ್ವಿತ ಜೀವನ ನಡೆಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಪಾಸಾಗಿ ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಅವರ ಇಬ್ಬರೂ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಶಿಕ್ಷಣ ಕೊಡಿಸುವಲ್ಲಿಯೂ ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಅವರ ಆಗತ್ಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಅಕೆಯಂತಹ ಹಲವು ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ನೆರವು ನೀಡಿದ್ದಕ್ಕಾಗಿ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ಗೆ ಋಣಿ ಮತ್ತು ಕೃತಜ್ಞರಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಶಿವರತ್ನಮ್ಮ ತಮ್ಮ ಯಶಸ್ಸಿಗೆ ಅವರ ಉದ್ದಿಮೆಯನ್ನು ಸ್ಥಾಪಿಸಲು ಹಣಕಾಸು ನೆರವು ನೀಡಿದ ಮತ್ತು ಅವರ ಕುಟುಂಬವನ್ನು ಸಮರ್ಥವಾಗಿ ನಿರ್ಧಾರಿಸಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡಿದ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಅನ್ನು ನೆನೆಯುತ್ತಾರೆ.

Date	18 January, 2020
Publication	Kalapriya
Edition	Harohalli, Bengaluru
Page No.	4

ತಮ್ಮ ಕನಸುಗಳನ್ನು ಸಾಕಾರಗೊಳಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್

ಹಾರೋಹಳ್ಳಿ: ಕುಟುಂಬದ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯ ನೋವನ್ನು ಹೊರುವ ಒಬ್ಬ ಮಹಿಳೆಯ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಕುಟುಂಬ ಮತ್ತು ಮಕ್ಕಳ ಶೈಕ್ಷಣಿಕ ಮತ್ತು ಶಿಕ್ಷಣದ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ಹೊತ್ತು ಮಹಿಳೆಗೆ ಆಸರೆವಾಗಿ ಕಿರುಹಣಕಾಸು ಸಂಸ್ಥೆಯಿಂದ ಹಣಕಾಸಿನ ನೆರವು ಸಿಕ್ಕಿದರೆ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯಿಂದ ಹೇಗೆ ಹೈನೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಸ್ವಾವಲಂಬಿಗಳಾಗಿ ಬದುಕನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡು ಕುಟುಂಬದ ಜೊತೆಗೆ ನೆಮ್ಮದಿಯ ಜೀವನವನ್ನು ಸಾಗಿಸಬಹುದು ಎಂಬುದಕ್ಕೆ ಹಾರೋಹಳ್ಳಿಯ ಶಿವರತ್ನಮ್ಮ ಆದರ್ಶ ಪ್ರಾಂಶುಗಳಾಗಿ ಕಾಣುತ್ತಾರೆ.



ಅಂದ ಹಾಗೆ ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರು ಹಾರೋಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿರುವ ಒಬ್ಬ 38 ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ ಮಹಿಳೆ. ಒಬ್ಬ ಸ್ವತಂತ್ರ ಗೃಹಿಣಿಯಿಂದ ಒಬ್ಬ ಉದ್ಯಮಿಯಾದ ಆಕೆಯ ನಿರ್ಧಾರ ಮತ್ತು ಹೋರಾಟದ ಕಥೆಯು ಆದರ್ಶ ಪ್ರಾಂಶುಗಳಾದ ಮತ್ತು ಪ್ರೇರಣೆ ನೀಡುತ್ತಿದೆ.

ಸಮಾಜ ಎಂಟು ವರ್ಷಗಳ ಹಿಂದೆ, ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರ ಜೀವನವು ಹೊಟ್ಟೆನೋವಿನಿಂದ ಆಕೆಯ ಪತಿ ಮತ್ತು ಸಾವನ್ನಪ್ಪಿದ ನಂತರ ವಿರಳತೆಗಳನ್ನು ಕಂಡಿತು. ಆಕೆ ಮತ್ತು ಆಕೆಯ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಸಾಕುವ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ಸಿದ್ಧರಾಗಿದ್ದ ಹೊರುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಹಣಕಾಸಿನ ಸ್ಥಿತಿಯ ಒತ್ತಡದಲ್ಲಿ ಒಲಿದರು. ಅವರ ಪತಿ ನಿಧನರಾದ ನಂತರ, ಕುಟುಂಬದ ಶೈಕ್ಷಣಿಕಗಾಗಿ ರೇಷ್ಯುಗಳು ಸಾಕಾಣಿಕೆಯಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡರು. ಆದರೂ, ಇದರಿಂದ ಬರುತ್ತಿದ್ದ ಆದಾಯವು ದೈನಂದಿನ ವೆಚ್ಚಗಳನ್ನು ಸರಿದೂಗಿಸಲು ಸಾಕಾಗುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ. ಅವರ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು, ಅವರು ತಮ್ಮ ಗ್ರಾಮದ ಸ್ವ-ಸಹಾಯ ಗುಂಪಿನಿಂದ ಸಾಲವನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಂಡರು ಮತ್ತು ಹಾಲು ಕೊಡುವ ಹಸುವೊಂದನ್ನು ಖರೀದಿಸಿದರು. ಹಾಲು ಮಾರಾಟದಿಂದ ಅವರ ಸ್ಥಿತಿಯು ಉತ್ತಮಗೊಂಡಿತು. ಆದರೆ ಸಮರ್ಪಕವಲ್ಲದ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ಅವರ ಉದ್ದಿಮೆಯನ್ನು

ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗಲಿಲ್ಲ.

ಎಲ್ಲಾ ನಿರಾಶೆಗಳನ್ನು ತಡೆದುಕೊಂಡು, ಅವರು ತಮ್ಮ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ನಿರ್ಧರಿಸಿದರು ಮತ್ತು ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ಗೆ ಅವರಿಗೆ ಗೊತ್ತಿರುವ ಒಬ್ಬರು ಅವರನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸಿದರು. ಅವರ ಸಹಕಾರ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹದಿಂದ ಸಾಲವನ್ನು ಪಡೆದು, ಹೈನೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮರುಪಾವತಿಸುವ ನೆರವಿನೊಂದಿಗೆ, ಅವರು ತಮ್ಮ ಉದ್ದಿಮೆಯನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಯಿತು. ಇಂದು ಅವರು ನಾಲ್ಕು ಹಸುಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವರು ಮತ್ತು ತಿಂಗಳಿಗೆ ರೂ.20,000 ಗಳಷ್ಟು ಆದಾಯವನ್ನು ಕೈತುಂಬಾ ಗಳಿಸಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದರು. ಈಗ ಅವರು ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಗೌರವಾನ್ವಿತ ಜೀವನ ನಡೆಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ ಮತ್ತು ಖಾಸಗಿ ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಅವರ ಇಬ್ಬರೂ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಶಿಕ್ಷಣ ಕೊಡುವಲ್ಲಿಯೂ ಉಪಸ್ಥಿತರಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಅವರ ಅಗತ್ಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಆಕೆಯಂತಹ ಹಲವು ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ನೆರವು ನೀಡಿದ್ದಕ್ಕಾಗಿ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ಗೆ ಋಣಿಯಾಗಿದ್ದಾರೆ ಮತ್ತು ಕೃತಜ್ಞರಾಗಿದ್ದಾರೆ.

ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರು ತಮ್ಮ ಉದ್ದಿಮೆಯನ್ನು ಸ್ವಾಧೀನವಾಗಿ ಹಣಕಾಸು ನೆರವು ನೀಡಿದ ಮತ್ತು ಅವರ ಕುಟುಂಬವನ್ನು ಸಮರ್ಥವಾಗಿ ನಿಭಾಯಿಸಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡಿದ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಅನ್ನು ನೆನೆಯುತ್ತಾರೆ.

Date	18 January, 2020
Publication	Kemmugilu
Edition	Harohalli, Bengaluru
Page No.	5

ತಮ್ಮ ಕನಸುಗಳನ್ನು ಸಾಕಾರಗೊಳಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ನೆರವಾಗಿರುವ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್

ಕನಕಪುರ:ಹಾರೋಹಳ್ಳಿ ಕುಟುಂಬದ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯು ನೋಡವನ್ನು ಹೊರುವ ಯುವವಾಸಿನಿಲ್ಲದೆ ಬಡತನದಲ್ಲಿತ್ತು ಕುಟುಂಬ ಮತ್ತು ಮಕ್ಕಳ ಶೋಷಣೆ ಮತ್ತು ಶಿಕ್ಷಣದ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ಹೊತ್ತು ಮಹಿಳೆಗೆ ಆಸರೆ ಯಾಗಿ ಕರುಹಣಕಾಸು ಸಂಸ್ಥೆಯಿಂದ ಹಣಕಾಸಿನ ನೆರವು ಸಿಕ್ಕಿದರೆ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯಿಂದ ಹೇಗೆ ಜೈನೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಸ್ವಾವಲಂಬಿಗಳಾಗಿ ಬದುಕನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡು ಕುಟುಂಬದ ಜೊತೆಗೆ ನೆಮ್ಮದಿಯ ಜೀವನವನ್ನು ಸಾಗಿಸಬಹುದು ಎಂಬುದಕ್ಕೆ ಹಾರೋಹಳ್ಳಿಯ ಶಿವರತ್ನಮ್ಮ ಅದರ್ಶ ಪ್ರಾಯವಾಗಿ ಕಾಣುತ್ತಾರೆ.

ಅಂದ ಹಾಗೆ ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರು ಹಾರೋಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿರುವ ಒಬ್ಬ 38 ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ ಮಹಿಳೆ, ಒಬ್ಬ ಸ್ವತಂತ್ರ ಗೃಹಿಣಿಯಿಂದ ಒಬ್ಬ ಉದ್ಯಮಿಯಾದ ಆಕೆಯ ನಿರ್ಧಾರ ಮತ್ತು ಹೋರಾಟದ ಕಥೆಯು ಅದರ್ಶ ಪ್ರಾಯವಾಗಿದೆ ಮತ್ತು ಪ್ರೇರಣೆ ನೀಡುತ್ತಿದೆ.

ಸಮಾಜ ಎಂಬ ವರ್ಷಗಳ ಹಿಂದೆ, ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರ ಜೀವನವು ಹೊಟ್ಟೆ ನೋವಿನಿಂದ ಆಕೆಯ ಪತಿಯು ಸಾವನ್ನಪ್ಪಿದ ನಂತರ ವಿರಳತೆಗಳನ್ನು ಕಂಡಿತು, ಆಕೆ ಮತ್ತು ಆಕೆಯ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಸಾಕುವ



ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ಸಿದ್ಧರಾಗಿಲ್ಲದೆ ಹೊರುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಹಣಕಾಸಿನ ಸ್ಥಿತಿಯು ಒತ್ತಡದಲ್ಲಿ ಸಿಲುಕಿದರು, ಅವರ ಪತಿ ನಿಧನರಾದ ನಂತರ, ಕುಟುಂಬದ ಶೋಷಣೆಗಾಗಿ ರೇಷಿಯನ್ ಸಾಕಾಣಿಕೆಯಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡರು, ಆದರೂ, ಇದರಿಂದ ಬದುಕಿದ್ದ ಆದಾಯವು ದೈನಂದಿನ ಮೆಚ್ಚುಗೆಯನ್ನು ಸರಿದೂಗಿಸಲು ಸಾಕಾಗುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ, ಅವರ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು,

ಅವರು ತಮ್ಮ ಗ್ರಾಮದ ಸ್ವ-ಸಹಾಯ ಗುಂಪಿನಿಂದ ಸಾಲವನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಂಡರು ಮತ್ತು ಹಾಲು ಕೊಡುವ ಹಸುವೊಂದನ್ನು ಖರೀದಿಸಿದರು, ಹಾಲು ಮಾರಾಟದಿಂದ ಅವರ ಸ್ಥಿತಿಯು ಉತ್ತಮಗೊಂಡಿತು, ಆದರೆ ಸಮರ್ಪಕವಲ್ಲದ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ಅವರ ಉದ್ಯಮಿಯನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗಲಿಲ್ಲ.

ಎಲ್ಲಾ ನಿರಾಶೆಗಳನ್ನು ತಡೆದುಕೊಂಡು, ಅವರು ತಮ್ಮ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು

ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ನಿರ್ಧರಿಸಿದರು ಮತ್ತು ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ಗೆ ಅವರಿಗೆ ಗೊತ್ತಿರುವ ಒಬ್ಬರು ಅವರನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸಿದರು. ಅವರ ಸಹಕಾರ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹದಿಂದ ಸಾಲವನ್ನು ಪಡೆದು, ಜೈನೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮರುಪಾವತಿಸುವ ನೆರವಿನೊಂದಿಗೆ ಅವರು ತಮ್ಮ ಉದ್ಯಮಿಯನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಯಿತು, ಇಂದು ಅವರು ನಾಲ್ಕು ಹಸುಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವರು ಮತ್ತು ತಿಂಗಳಿಗೆ ರೂ.20,000 ಗಳಷ್ಟು ಆದಾಯವನ್ನು ಕೈತುಂಬಾ ಗಳಿಸಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದರು.

ಈಗ ಅವರು ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಗೌರವಾನ್ವಿತ ಜೀವನ ನಡೆಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ ಮತ್ತು ಖಾಸಗಿ ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಅವರ ಇಬ್ಬರೂ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಶಿಕ್ಷಣ ಕೊಡಿಸುವಲ್ಲಿಯೂ ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿದ್ದಾರೆ, ಅವರ ಆಗತ್ಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಆಕೆಯಂತಹ ಹಲವು ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ನೆರವು ನೀಡಿದ್ದಕ್ಕಾಗಿ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ಗೆ ಋಣಿಯಾಗಿದ್ದಾರೆ ಮತ್ತು ಕೃತಜ್ಞರಾಗಿದ್ದಾರೆ.

ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರು ತಮ್ಮ ಯಶಸ್ಸಿಗೆ ಅವರ ಉದ್ಯಮಿಯನ್ನು ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ ಹಣಕಾಸು ನೆರವು ನೀಡಿದ ಮತ್ತು ಅವರ ಕುಟುಂಬವನ್ನು ಸಮರ್ಥವಾಗಿ ನಿರ್ಧಾಯಿಸಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡಿದ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಅನ್ನು ನೆನೆಯುತ್ತಾರೆ.

Date	27 January, 2020
Publication	Kranthi Ranga
Edition	Harohalli, Bengaluru
Page No.	1

ಜವಾಬ್ದಾರಿ ನಿಭಾಯಿಸಲು ಆಸರೆಯಾದ ಮೈಕ್ರೋ ಫೈನಾನ್ಸ್

ಕೆಳಕಂಡು: ಕುಟುಂಬದ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯು ನೋಗವನ್ನು ಹೊಂದುವ ಯುವ ಮಗುವಿನಿಂದ ಬಡತನದಲ್ಲಿರುವ ಕುಟುಂಬ ಮತ್ತು ಮಕ್ಕಳ ಪೋಷಣೆ ಮತ್ತು ಶಿಕ್ಷಣದ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ಹೊತ್ತು ಮಹಿಳೆಗೆ ಆಸರೆಯಾಗಿ ಕಿರುಹಣಕಾಸು ಸಂಸ್ಥೆಯಿಂದ ಹಣಕಾಸಿನ ನೆರವು ಸಿಕ್ಕಿದರೆ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯಿಂದ ಹೇಗೆ ಹೈಕೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಸ್ವಾವಲಂಬಿಗಳಾಗಿ ಬದುಕನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡು ಕುಟುಂಬದ ಜೊತೆಗೆ ನಮ್ಮದಿಯ ಜೀವನವನ್ನು ಸಾಗಿಸ ಬಹುದು ಎಂಬುದಕ್ಕೆ ಹಾರೋಹಳ್ಳಿಯ ಕಿವರತ್ತಮ್ಮ ಅವರ್ತಪ್ರಾಯವಾಗಿ ಕಾಣುತ್ತಾರೆ.

ಅಂದ ಹಾಗೆ ಕಿವರತ್ತಮ್ಮನವರು ಹಾರೋಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿರುವ ಒಬ್ಬ 38 ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ ಮಹಿಳೆ, ಒಬ್ಬ ಸ್ವತಂತ್ರ ಗೃಹಿಣಿಯಿಂದ ಒಬ್ಬ ಉದ್ಯಮಿಯಾದ ಆಕೆಯ ನಿರ್ಧಾರ ಮತ್ತು ಹೊರಾಟದ ಕಠಿಣತೆ ಅದರ್ತಪ್ರಾಯವಾಗಿದೆ ಮತ್ತು ಪ್ರೇರಣೆ ನೀಡುತ್ತದೆ.

ಸಮಾಜ ಎಂಬ ವರ್ತಕಳ ಹಿಂದೆ, ಕಿವರತ್ತಮ್ಮನವರ ಜೀವನವು



ಹೊಟ್ಟೆಸೋವಿನಿಂದ ಆಕೆಯ ಪತಿಯು ಸಾವನ್ನಪ್ಪಿದ ನಂತರ ವಿರಳತೆಗಳನ್ನು ಕಂಡಿತು. ಆಕೆ ಮತ್ತು ಆಕೆಯ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಸಾಕುವ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ಸಿದ್ಧರಾಗಿಲ್ಲದೆ ಹೊರುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಹಣಕಾಸಿನ ಸ್ಥಿತಿಯ ಒತ್ತಡದಲ್ಲಿ ಸಿಲುಕಿದರು. ಅವರ ಪತಿ ನಿಧನರಾದ ನಂತರ, ಕುಟುಂಬದ ಪೋಷಣೆಗಾಗಿ ರೇಷಿಯಲು ಸಾಕಾಣಿಕೆಯಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡರು. ಆದರೂ, ಇದ-

ರಿಂದ ಬದುಕಿದ್ದ ಆದಾಯವು ದೈನಂದಿನ ಬೆಚ್ಚಗಲನ್ನು ಸಂದೂಕಿಸಲು ಸಾಕಾಗುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ. ಅವರ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು, ಅವರು ತಮ್ಮ ಗ್ರಾಮದ ಸ್ವ-ಸಹಾಯ ಗುಂಪಿನಿಂದ ಸಾಲವನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಂಡರು ಮತ್ತು ಹಾಲು ಕೊಡುವ ಹಸುವೊಂದನ್ನು ಖರೀದಿಸಿದರು. ಹಾಲು ಮಾರಾಟದಿಂದ ಅವರ ಸ್ಥಿತಿಯು ಉತ್ತಮಗೊಂಡಿತು, ಆದರೆ ಸಮರ್ಪಕವಲ್ಲದ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ಅವರ ಉದ್ಯಮವನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗಲಿಲ್ಲ.

ಎಲ್ಲಾ ನಿರಾಶೆಗಳನ್ನು ತಡೆದುಕೊಂಡು, ಅವರು ತಮ್ಮ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ನಿರ್ಧರಿಸಿದರು ಮತ್ತು ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ಗೆ ಅವರಿಗೆ ಗೊತ್ತಿರುವ ಒಬ್ಬರು ಅವರನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸಿದರು.

ಅವರ ಸಹಕಾರ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹದಿಂದ ಸಾಲವನ್ನು ಪಡೆದು, ಹೈಕೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮರು

ಪಾವತಿಸುವ ನೆರವಿನೊಂದಿಗೆ, ಅವರು ತಮ್ಮ ಉದ್ಯಮವನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಯಿತು. ಇಂದು ಅವರು ನಾಲ್ಕು ಹಾಡುಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವರು ಮತ್ತು ತಿಂಗಳಿಗೆ ರೂ.20,000 ಗಳಷ್ಟು ಆದಾಯವನ್ನು ಕೈತುಂಬ ಗಳಿಕೆಯ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದರು.

ಈಗ ಅವರು ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಗೌರವಾನ್ವಿತ ಜೀವನ ನಡೆಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ ಮತ್ತು ಖಾಸಗಿ ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಅವರ ಇಬ್ಬರೂ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಶಿಕ್ಷಣ ಕೊಡಿಸುವಲ್ಲಿಯೂ ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಅವರ ಅಗತ್ಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಆಕೆಯಂತಹ ಹಲವು ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ನೆರವು ನೀಡಿದ್ದಕ್ಕಾಗಿ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ಗೆ ಖುಷಿಯಾಗಿದ್ದಾರೆ ಮತ್ತು ಕೃತಜ್ಞರಾಗಿದ್ದಾರೆ.

ಕಿವರತ್ತಮ್ಮನವರು ತಮ್ಮ ಯಶಸ್ಸಿಗೆ ಅವರ ಉದ್ಯಮವನ್ನು ಸ್ಥಾಪಿಸಲು ಹಣಕಾಸು ನೆರವು ನೀಡಿದ ಮತ್ತು ಅವರ ಕುಟುಂಬವನ್ನು ಸಮರ್ಥನಾಗಿ ನಿಭಾಯಿಸಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡಿದ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಅನ್ನು ನೆನೆಯುತ್ತಾರೆ.

Date	18 January, 2020
Publication	Masthamma Vaani
Edition	Harohalli, Bengaluru
Page No.	6

ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ನಿಂದ ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ಸಹಾಯ

ಕಸಕಪುರ: ಹಾರೋಹಳ್ಳಿ: ಕುಟುಂಬದ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯ ನೋಗವನ್ನು ಹೊರುವ ಯಜಮಾನನಿಲ್ಲದೆ ಬಡತನದಲ್ಲಿದ್ದು ಕುಟುಂಬ ಮತ್ತು ಮಕ್ಕಳ ವೋಷಣೆ ಮತ್ತು ಶಿಕ್ಷಣದ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ಹೊತ್ತ ಮಹಿಳೆಗೆ ಆಸರೆ ಯಾಗಿ ಕಿರುಹಣಕಾಸು ಸಂಸ್ಥೆಯಿಂದ ಹಣಕಾಸಿನ ನೆರವು ಸಿಕ್ಕಿದರೆ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯಿಂದ ಹೇಗೆ ಹೈನೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಸ್ವಾವಲಂಬಿಗಳಾಗಿ ಬದುಕನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡು ಕುಟುಂಬದ ಜೊತೆಗೆ ನೆಮ್ಮದಿಯ ಜೀವನವನ್ನು ಸಾಗಿಸಬಹುದು ಎಂಬುದಕ್ಕೆ ಹಾರೋಹಳ್ಳಿಯ ಶಿವರತ್ನಮ್ಮ ಅದರ್ಶಪ್ರಾಯವಾಗಿ ಕಾಣುತ್ತಾರೆ.

ಅಂದ ಹಾಗೆ ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರು ಹಾರೋಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿರುವ ಒಬ್ಬ 38 ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ ಮಹಿಳೆ. ಒಬ್ಬ ಸ್ವತಂತ್ರ ಗೃಹಿಣಿಯಿಂದ ಒಬ್ಬ ಉದ್ಯಮಿಯಾದ ಆಕೆಯ ನಿರ್ಧಾರ ಮತ್ತು ಹೋರಾಟದ ಕಥೆಯು ಅದರ್ಶಪ್ರಾಯವಾಗಿದೆ ಮತ್ತು ಪ್ರೇರಣೆ ನೀಡುತ್ತಿದೆ.

ಸಮಾರು ಎಂಟು ವರ್ಷಗಳ ಹಿಂದೆ, ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರ ಜೀವನವು ಹೊಟ್ಟೆನೋವಿನಿಂದ ಆಕೆಯ ಪತಿಯು ಸಾವನ್ನಪ್ಪಿದ ನಂತರ ಏರಿಳಿತಗಳನ್ನು ಕಂಡಿತು. ಆಕೆ ಮತ್ತು ಆಕೆಯ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಸಾಕುವ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ಸಿದ್ಧರಾಗಿಲ್ಲದೆ ಹೊರುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಹಣಕಾಸಿನ ಸ್ಥಿತಿಯ ಒತ್ತಡದಲ್ಲಿ ಸಿಲುಕಿದರು. ಅವರ ಪತಿ ನಿಧನರಾದ ನಂತರ, ಕುಟುಂಬದ ವೋಷಣೆಗಾಗಿ ರೇಷ್ಯಾಕುಳು ಸಾಕಾಣಿಕೆಯಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡರು, ಆದರೂ,



ಇದರಿಂದ ಬರುತ್ತಿದ್ದ ಆದಾಯವು ದೈನಂದಿನ ವೆಚ್ಚಗಳನ್ನು ಸರಿದೂಗಿಸಲು ಸಾಕಾಗುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ. ಅವರ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು, ಅವರು ತಮ್ಮ ಗ್ರಾಮದ ಸ್ವ-ಸಹಾಯ ಗುಂಪಿನಿಂದ ಸಾಲವನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಂಡರು ಮತ್ತು ಹಾಲು ಕೊಡುವ ಹಸುವೊಂದನ್ನು ಖರೀದಿಸಿದರು. ಹಾಲು ಮಾರಾಟದಿಂದ ಅವರ ಸ್ಥಿತಿಯು ಉತ್ತಮಗೊಂಡಿತು, ಆದರೆ ಸಮರ್ಪಕವಲ್ಲದ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ಅವರ ಉದ್ದಿಮೆಯನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗಲಿಲ್ಲ.

ಎಲ್ಲಾ ನಿರಾಶೆಗಳನ್ನು ತಡೆದುಕೊಂಡು, ಅವರು ತಮ್ಮ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ನಿರ್ಧರಿಸಿದರು ಮತ್ತು ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ಗೆ ಅವರಿಗೆ ಗೊತ್ತಿರುವ ಒಬ್ಬರು ಅವರನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸಿದರು. ಅವರ ಸಹಕಾರ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹದಿಂದ ಸಾಲವನ್ನು ಪಡೆದು, ಹೈನೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮರುಪಾವತಿಸುವ ನೆರವಿನೊಂದಿಗೆ,

ಅವರು ತಮ್ಮ ಉದ್ದಿಮೆಯನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಯಿತು. ಇಂದು ಅವರು ನಾಲ್ಕು ಹಸುಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವರು ಮತ್ತು ತಿಂಗಳಿಗೆ ರೂ.20,000 ಗಳಷ್ಟು ಆದಾಯವನ್ನು ಕೈತುಂಬಾ ಗಳಿಸಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದರು.

ಈಗ ಅವರು ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಗೌರವಾನ್ವಿತ ಜೀವನ ನಡೆಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ ಮತ್ತು ಖಾಸಗಿ ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಅವರ ಇಬ್ಬರೂ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಶಿಕ್ಷಣ ಕೊಡಿಸುವಲ್ಲಿಯೂ ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಅವರ ಅಗತ್ಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಆಕೆಯಂತಹ ಹಲವು ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ನೆರವು ನೀಡಿದ್ದಕ್ಕಾಗಿ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ಗೆ ಋಣಿಯಾಗಿದ್ದಾರೆ ಮತ್ತು ಕೃತಜ್ಞರಾಗಿದ್ದಾರೆ.

ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರು ತಮ್ಮ ಯಶಸ್ಸಿಗೆ ಅವರ ಉದ್ದಿಮೆಯನ್ನು ಸ್ಥಾಪಿಸಲು ಹಣಕಾಸು ನೆರವು ನೀಡಿದ ಮತ್ತು ಅವರ ಕುಟುಂಬವನ್ನು ಸಮರ್ಥವಾಗಿ ನಿಭಾಯಿಸಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡಿದ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಅನ್ನು ನೆನೆಯುತ್ತಾರೆ.

Date	28 January, 2020
Publication	Ramanagara Times
Edition	Harohalli, Bengaluru
Page No.	2

ಆರ್ಥಿಕವಾಗಿ ಮುಂಬರಲು ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್

ಕನಕಪುರ: ಕುಟುಂಬದ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯು ಮೊಗವನ್ನು ಹೊರುವ ಯುವವಾಸಿಗಳಲ್ಲದೆ ಬಡತನದಲ್ಲಿದ್ದು ಕುಟುಂಬ ಮತ್ತು ಮಕ್ಕಳ ವೋಷಣೆ ಮತ್ತು ಶಿಕ್ಷಣದ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ಹೊತ್ತ ಮಹಿಳೆಗೆ ಆಸರೆಯಾಗಿ ಕಿರುಹಣಕಾಸು ಸಂಸ್ಥೆಯಿಂದ ಹಣಕಾಸಿನ ನೆರವು ಸಿಕ್ಕಿದರೆ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯಿಂದ ಹೇಗೆ ಹೈನೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಬದುಕನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡು ಕುಟುಂಬದ ಜೊತೆಗೆ ನಮ್ಮದಿಯ ಜೀವನವನ್ನು ಸಾಗಿಸಬಹುದು ಎಂಬುದಕ್ಕೆ ಹಾರೋಹಳ್ಳಿಯ ಶಿವರತ್ನಮ್ಮ ಅದರ್ಶಪ್ರಾಯವಾಗಿ ಕಾಣುತ್ತಾರೆ.

ಅಂದ ಹಾಗೆ ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರು ಹಾರೋಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿರುವ ಒಬ್ಬ 38 ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ ಮಹಿಳೆ. ಒಬ್ಬ ಸ್ವತಂತ್ರ ಗೃಹಿಣಿಯಿಂದ ಒಬ್ಬ ಉದ್ಯಮಿಯಾದ ಆಕೆಯ ನಿರ್ಧಾರ ಮತ್ತು ಹೋರಾಟದ ಕಥೆಯು ಅದರ್ಶಪ್ರಾಯವಾಗಿದೆ ಮತ್ತು ಪ್ರೇರಣೆ ನೀಡುತ್ತಿದೆ.

ಸಮಾರು ಎಂಟು ವರ್ಷಗಳ ಹಿಂದೆ, ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರ ಜೀವನವು ಹೊಟ್ಟೆನೋವಿನಿಂದ



ಆಕೆಯ ಪತಿಯು ಸಾವನ್ನಪ್ಪಿದ ನಂತರ ವಿರಳತಗಳನ್ನು ಕಂಡಿತು. ಆಕೆ ಮತ್ತು ಆಕೆಯ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಸಾಕುವ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ಸಿದ್ಧರಾಗಿಲ್ಲದೆ ಹೊರುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಹಣಕಾಸಿನ ಸ್ಥಿತಿಯ ಒತ್ತಡದಲ್ಲಿ ಸಿಲುಕಿದರು. ಅವರ ಪತಿ ನಿಧನರಾದ ನಂತರ, ಕುಟುಂಬದ ವೋಷಣೆಗಾಗಿ ರೇಷ್ಯುಕುಳು ಸಾಕಾಣಿಕೆಯಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡರು. ಆದರೂ, ಇದರಿಂದ ಬರುತ್ತಿದ್ದ ಆದಾಯವು ದೈನಂದಿನ ವೆಚ್ಚಗಳನ್ನು ಸರಿದೂಗಿಸಲು ಸಾಕಾಗುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ. ಅವರ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು, ಅವರು ತಮ್ಮ ಗ್ರಾಮದ ಸ್ವ-ಸಹಾಯ

ಗುಂಪಿನಿಂದ ಸಾಲವನ್ನು ಪಡೆದು- ಕೊಂಡರು ಮತ್ತು ಹಾಲು ಕೊಡುವ ಹಸುವೊಂದನ್ನು ಖರೀದಿಸಿದರು. ಹಾಲು ಮಾರಾಟದಿಂದ ಅವರ ಸ್ಥಿತಿಯು ಉತ್ತಮಗೊಂಡಿತು, ಆದರೆ ಸಮರ್ಪಕವಲ್ಲದ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ಅವರ ಉದ್ಯಮಿಯನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗಲಿಲ್ಲ. ಎಲ್ಲಾ ನಿರಾಶೆಗಳನ್ನು ತಡೆದು- ಕೊಂಡು, ಅವರು ತಮ್ಮ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ನಿರ್ಧರಿಸಿದರು ಮತ್ತು ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ಗೆ ಅವರಿಗೆ ಗೊತ್ತಿರುವ ಒಬ್ಬರು ಅವರನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸಿದರು. ಅವರ ಸಹಕಾರ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹದಿಂದ ಸಾಲವನ್ನು

ಪಡೆದು, ಹೈನೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮರುಪಾವತಿಸುವ ನೆರವಿನೊಂದಿಗೆ, ಅವರು ತಮ್ಮ ಉದ್ಯಮಿಯನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಯಿತು. ಇಂದು ಅವರು ನಾಲ್ಕು ಹಸುಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವರು ಮತ್ತು ಶಿಂಗಳಿಗೆ ರೂ.20,000 ಗಳಷ್ಟು ಆದಾಯವನ್ನು ಕೈಕುಂಬಾ ಗಳಿಸಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದರು. ಈಗ ಅವರು ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಗೌರವಾನ್ವಿತ ಜೀವನ ನಡೆಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ ಮತ್ತು ಖಾಸಗಿ ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಅವರ ಇಬ್ಬರೂ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಶಿಕ್ಷಣ ಕೊಡಿಸುವಲ್ಲಿಯೂ ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಅವರ ಆಗತ್ಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಆಕೆಯಂತಹ ಹಲವು ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ನೆರವು ನೀಡಿದ್ದಕ್ಕಾಗಿ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ಗೆ ಋಣಿಯಾಗಿದ್ದಾರೆ ಮತ್ತು ಕೃತಜ್ಞರಾಗಿದ್ದಾರೆ.

ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರು ತಮ್ಮ ಯಶಸ್ಸಿಗೆ ಅವರ ಉದ್ಯಮಿಯನ್ನು ಸ್ಥಾಪಿಸಲು ಹಣಕಾಸು ನೆರವು ನೀಡಿದ ಮತ್ತು ಅವರ ಕುಟುಂಬವನ್ನು ಸಮರ್ಥವಾಗಿ ನಿರ್ಧಾಯಿಸಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡಿದ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಅನ್ನು ನೆನೆಯುತ್ತಾರೆ.

Date	28 January, 2020
Publication	Ramanagara Varthe
Edition	Harohalli, Bengaluru
Page No.	4

ಮಹಿಳೆಗೆ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್ ಸಹಾಯಹಸ್ತ

ಕನಕಪುರ: ಕುಟುಂಬದ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನೊಳಗೊಂಡು ಹೊಸದುರಗುಳಿನಲ್ಲಿರುವ ಬಡತನದಲ್ಲಿರುವ ಕುಟುಂಬ ಮತ್ತು ಮಕ್ಕಳ ಶೈಕ್ಷಣಿಕ ಮತ್ತು ವೈಯಕ್ತಿಕ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ಹೊತ್ತು ಮಹಿಳೆಗೆ ಆಸರೆವಾಗಿ ಕಿರು ಹಣಕಾಸು ಸಂಸ್ಥೆಯಿಂದ ಹಣಕಾಸಿನ ನೆರವು ಸಿಕ್ಕಿದರೆ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯಿಂದ ಹೇಗೆ ಹೈನೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಸ್ವಾವಲಂಬಿಗಳಾಗಿ ಬದುಕನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡು ಕುಟುಂಬದ ಜೊತೆಗೆ ನೆಮ್ಮದಿಯ ಜೀವನವನ್ನು ಸಾಗಿಸಬಹುದು ಎಂಬುದಕ್ಕೆ ಹಾರೋಹಳ್ಳಿಯ ಶಿವರತ್ನಮ್ಮ ಅವರ ಪ್ರಾಥಮಿಕ ವಾಗಿ ಕಾರಣವಾಗಿದೆ.

ಅಂದ ಹಾಗೆ ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರು ಹಾರೋಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿರುವ ಒಬ್ಬ 38 ವರ್ಷದವಳು. ಒಬ್ಬ ಸ್ವತಂತ್ರ ಗೃಹಿಣಿಯಿಂದ ಒಬ್ಬ ಉದ್ಯಮಿಯಾದ ಆಕೆಯ ನಿರ್ಧಾರ ಮತ್ತು ಹೋರಾಟದ ಕಥೆಯು ಅದರ್ಶಪ್ರಾಯವಾಗಿದೆ ಮತ್ತು ಪ್ರೇರಣೆ ನೀಡುತ್ತಿದೆ.

ಸಮಾಜ ಎಂಬ ಪರ್ವತಗಳ ಒಂದೇ, ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರ ಜೀವನವು ಹೊಟ್ಟೆಗೋವಿನಿಂದ ಆಕೆಯ ಹತೆಯ ಸಾದೃಶ್ಯವಾದ ಸಂತರದಿಂಗಳನ್ನು ಕಂಡಿತು. ಆಕೆ ಮತ್ತು ಆಕೆಯ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಸಾಕುವ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು



ಸಿದ್ಧವಾಗಿಲ್ಲದೆ ಹೊರುವುದಕ್ಕಾಗಿ ಹಣಕಾಸಿನ ಸ್ಥಿತಿಯ ಒತ್ತಡದಲ್ಲಿ ಒಲುಕಿದರು. ಅವರ ಪತಿ ನಿಧನರಾದ ಸಂತರ, ಕುಟುಂಬದ ಶೈಕ್ಷಣಿಕ ಗಾಗಿ ರೇಷಿಯನ್ ಸಾಕಾಣಿಕೆಯಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡರು. ಆದರೂ, ಇದರಿಂದ ಬರುತ್ತಿದ್ದ ಆದಾಯವು ದೈನಂದಿನ ಮಟ್ಟಗಳನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ಸಲು ಸಾಕಾಗುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ. ಅವರ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು, ಅವರು ತಮ್ಮ

ಗ್ರಾಮದ ಸ್ವ-ಸಹಾಯ ಗುಂಪಿನಿಂದ ಸಾಲವನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಂಡರು ಮತ್ತು ಹಾಲು ಕೊಡುವ ಹಸುವೊಂದನ್ನು ಖರೀದಿಸಿದರು. ಹಾಲು ಮಾರಾಟದಿಂದ ಅವರ ಸ್ಥಿತಿಯು ಉತ್ತಮಗೊಂಡಿತು, ಆದರೆ ಸಮರ್ಪಕವಲ್ಲದ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ಅವರ ಉದ್ಯಮವನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗಲಿಲ್ಲ.

ಎಲ್ಲಾ ನಿರಾಸೆಗಳನ್ನು ತಡೆದುಕೊಂಡು,

ಅವರು ತಮ್ಮ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ನಿರ್ಧರಿಸಿದರು ಮತ್ತು ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ಗೆ ಅವರಿಗೆ ಗೊತ್ತಿರುವ ಒಬ್ಬರು ಅವರನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸಿದರು. ಅವರ ಸಹಕಾರ ಶೈಕ್ಷಣಿಕ ಹಿಂದಿನ ಸಾಲವನ್ನು ಪಡೆದು, ಹೈನೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮರು ಪಾವತಿಸುವ ನೆರವಿನೊಂದಿಗೆ, ಅವರು ತಮ್ಮ ಉದ್ಯಮವನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಯಿತು. ಇಂದು ಅವರು ನಾಲ್ಕು ಹಸುಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಮತ್ತು ತಿಂಗಳಿಗೆ ರೂ.20,000 ಗಳನ್ನು ಆದಾಯವನ್ನು ಕೈಪಿಡಿ ಗಳಿಸಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದರು.

ಈಗ ಅವರು ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಗೌರವಾನ್ವಿತ ಜೀವನ ನಡೆಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ ಮತ್ತು ಮಕ್ಕಳ ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಅವರ ಇಬ್ಬರೂ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ವೈಯಕ್ತಿಕ ಕೊಡುಗೆ ಪಡೆಯಲು ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಅವರ ಆಗತ್ಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಆಕೆಯಂತಹ ಹಲವು ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ನೆರವು ನೀಡಿವೆಕ್ಕಾಗಿ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ಗೆ ಧನ್ಯವಾದಗಳನ್ನು ಸಲ್ಲಿಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ.

ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರು ತಮ್ಮ ಯಶಸ್ಸಿಗೆ ಅವರ ಉದ್ಯಮವನ್ನು ಸ್ವಾಸ್ಥ್ಯವು ಹಣಕಾಸು ನೆರವು ನೀಡಿದ ಮತ್ತು ಅವರ ಕುಟುಂಬವನ್ನು ಸಮರ್ಥವಾಗಿ ನಿರ್ಧಾರಿಸಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡಿದ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ ಅನ್ನು ನೆನಪಿಸುತ್ತಾರೆ.

Date	27 January, 2020
Publication	Aarambha
Edition	Harohalli, Bengaluru
Page No.	3



ಆರ್ಥಿಕ ಸ್ವಾವಲಂಬನೆ

ಜನಕಪ್ಪಳ: ಹಾರೋಹಳ್ಳಿ ಕುಟುಂಬದ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯು ನೋಗವನ್ನು ಹೊರುವ ಯಜಮಾನನಲ್ಲದೆ ಬಡತನದಲ್ಲಿರುವ ಕುಟುಂಬ ಮತ್ತು ಮಕ್ಕಳ ಭೋಜನ ಮತ್ತು ಶಿಕ್ಷಣದ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ಹೊತ್ತ ಮಹಿಳೆಗೆ ಆಗಬೇಕಾಗಿ ತಿರುಹಣಕಾಸು ಸಂಸ್ಥೆಯಿಂದ ಹಣಕಾಸು ನೆರವು ಸಿಕ್ಕಿದರೆ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯಿಂದ ಹೇಗೆ ಹೈನೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಸ್ವಾವಲಂಬನಗಾಗಿ ಬರುತ್ತಾ ಕಟ್ಟಿಕೊಂಡು ಕುಟುಂಬದ ಜೊತೆಗೆ ನೆಮ್ಮದಿಯ ಜೀವನವನ್ನು ಸಾಗಿಸಬಹುದು ಎಂಬುದಕ್ಕೆ ಹಾರೋಹಳ್ಳಿಯ ಶಿವರತ್ನಮ್ಮ ಅದರ್ಶವನ್ನಾಯವಾಗಿ ಕಾಣುತ್ತಾರೆ.

ಅಂದ ಹಾಗೆ ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರು ಹಾರೋಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿರುವ ಒಬ್ಬ 35 ವರ್ಷ ವಯಸ್ಸಿನ ಮಹಿಳೆ. ಒಬ್ಬ ಸ್ವತಂತ್ರ ಗೃಹಿಣಿಯಿಂದ ಒಬ್ಬ ಉದ್ಯಮಿಯಾದ ಆಕೆಯ ನಿರ್ಧಾರ ಮತ್ತು ಹೋರಾಟದ ಕಥೆಯು ಅದರ್ಶವನ್ನಾಯವಾಗಿದೆ ಮತ್ತು ಪ್ರೇರಣೆ ನೀಡುತ್ತಿದೆ.

ಸಮಾಜ ಎಂಬ ವರ್ಷಗಳಿಂದ, ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರ ಜೀವನವು ಹೊಟ್ಟೆನೋವಿನಿಂದ ಆಕೆಯ ಪತಿಯು ಸಾವನ್ನಪ್ಪಿದ ನಂತರ ಮರಿಕಣಗಳನ್ನು ತಂದಿತು. ಆಕೆ ಮತ್ತು ಆಕೆಯ ಇಬ್ಬರು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಸಾಕುವ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ಒದ್ದಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಹೊರಾಟದಲ್ಲಾಗಿ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿಯು ಒತ್ತಡದಲ್ಲಿ ಸಿಲುಕಿದರು. ಅವರ ಪತಿ ನಿಧನರಾದ ನಂತರ, ಕುಟುಂಬದ ಭೋಜನಕ್ಕಾಗಿ ರೇಷನ್‌ಕಾರ್ಡು ಸಾಕಾಣಿಕೆಯಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡರು, ಅದರೂ, ಇದರಿಂದ ಬರುತ್ತಿದ್ದ ಆದಾಯವು ದೈನಂದಿನ ವೆಚ್ಚಗಳನ್ನು ಸಂದರೂಗಿಸಲು ಸಾಕಾಗುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ. ಅವರು ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು, ಅವರು ತಮ್ಮ ಗ್ರಾಮದ ಸ್ವ-ಸಹಾಯಿ ಗುಂಪಿನಿಂದ ಸಾಲವನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಂಡರು ಮತ್ತು ಹಾಲು ಕೊಡುವ ಹಸುವೊಂದನ್ನು ಖರೀದಿಸಿದರು. ಹಾಲು ಮಾರಾಟದಿಂದ ಅವರ ಸ್ಥಿತಿಯು ಉತ್ತಮಗೊಂಡಿತು, ಆದರೆ ಸಮರ್ಪಕವಲ್ಲದ ಉರಣದಿಂದಾಗಿ ಅವರ ಉದ್ಯಮವನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗಲಿಲ್ಲ.

ಎಲ್ಲಾ ನಿರಾಶೆಗಳನ್ನು ತಡೆದುಕೊಂಡು, ಅವರು ತಮ್ಮ ಹಣಕಾಸು ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಸುಧಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ನಿರ್ಧರಿಸಿದರು ಮತ್ತು ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ಗೆ ಅವರಿಗೆ ಗೊತ್ತಿರುವ ಒಬ್ಬರು ಅವರನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸಿದರು. ಅವರ ಸಹಕಾರ ಭರ್ತಿಪಡೆಯುವ ಸಾಲವನ್ನು ಪಡೆದು, ಹೈನೋದ್ಯಮದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಂಡು ಸಕಾಲದಲ್ಲಿ ಮರುಪಾವತಿಸುವ ನೆರವಿನೊಂದಿಗೆ, ಅವರು ತಮ್ಮ ಉದ್ಯಮವನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಯಿತು. ಇಂದು ಅವರು ನಾಲ್ಕು ಹಸುಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವರು ಮತ್ತು ತಿಂಗಳಿಗೆ ರೂ.20,000 ಗಳನ್ನು ಆದಾಯವನ್ನು ಕೈಕೊಂಡು ಗಣನೀಯ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದರು.

ಈಗ, ಅವರು ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಗೌರವಾನ್ವಿತ ಜೀವನ ಪಡೆದುಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ ಮತ್ತು ಖಾಸಗಿ ಕಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಅವರ ಇಬ್ಬರೂ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಶಿಕ್ಷಣ ಕೊಡುವಲ್ಲಿಯೂ ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಅವರ ಅಗತ್ಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಆಕೆಯಂತಹ ಹಲವು ಮಹಿಳೆಯರಿಗೆ ನೆರವು ನೀಡಿದ್ದಕ್ಕಾಗಿ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ಗೆ ಧನ್ಯವಾದಗಳು ಮತ್ತು ಕೃತ್ಯವಾಗಿದ್ದಾರೆ.

ಶಿವರತ್ನಮ್ಮನವರು ತಮ್ಮ ಯಶಸ್ಸಿಗೆ ಅವರ ಉದ್ಯಮವನ್ನು ಸ್ಥಾಪಿಸಲು ಹಣಕಾಸು ನೆರವು ನೀಡಿದ ಮತ್ತು ಅವರ ಕುಟುಂಬವನ್ನು ಸಮರ್ಥವಾಗಿ ನಿರ್ಧಾರಿಸಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡಿದ ಸಮಸ್ತ ಮೈಕ್ರೋಫೈನಾನ್ಸ್‌ ಅನ್ನು ನೆನಪಿಡುತ್ತಾರೆ.

Date	20 January, 2020
Publication	Maharashtra Times
Edition	Mumbai, Maharashtra
Page No.	10

‘उन्नती’चे उद्दिष्ट

मुंबई : राज्यातील उन्नती मायक्रोफीन (सूक्ष्म वित्त पुरवठा) प्रायव्हेट लिमिटेड कंपनीने मिशन २०२० अंतर्गत येत्या वर्षभरात एक लाख लाभार्थी कुटुंबांपर्यंत वित्तसेवा पोहोचवण्याचे उद्दिष्ट आखले आहे. रिझर्व्ह बँकेच्या नियमांनुसार नोंदणीकृत असलेली ही कंपनी सध्या पाच जिल्हांमध्ये कार्यरत असून तिने आतापर्यंत ५० हजारपेक्षा अधिक गरजू महिलांना आर्थिक सेवा पुरवली आहे.

Date	18 January, 2020
Publication	Saamna
Edition	Mumbai, Maharashtra
Page No.	9

महिला लघुउद्योगांसाठी 'उन्नती'

उन्नती मायक्रोफीन ही सूक्ष्म वित्त पुरवठा कंपनी आहे. आजपर्यंत 'उन्नती' ५० हजारांपेक्षा अधिक महिलांना आर्थिक सेवा पुरवून त्यांच्या सध्याच्या राहणीमानावर सकारात्मक ठसे उमटवले आहेत. 'उन्नती' ही कमी उत्पन्न असणाऱ्या कुटुंबांना कर्ज सेवा प्रदान करित असून ही सेवा सन २०२० पर्यंत एक लाखाहून अधिक कुटुंबांपर्यंत पोहचवायची आहे.

Date	20 January, 2020
Publication	Punya Nagri
Edition	Mumbai, Maharashtra
Page No.	5

उन्नतीचा राज्यात पाच जिल्ह्यांमध्ये विस्तार

। मुंबई : उन्नती मायक्रोफीन प्रायव्हेट लिमिटेड या एन-बी-एफ-सी एम.एफ.आय (सूक्ष्म वित्त पुरवठा) कंपनीने राज्यातील ५ जिल्ह्यांमध्ये विस्तार करत शाखांची मालिका तयार केली आहे. एन-बी-एफ-सी एम.एफ.आय या देशातील एकमात्र कंपनी आहेत ज्या कमी कमी उत्पन्न असणाऱ्या कुटुंबांना आर्थिक सेवा कोणत्याही तारणाशिवाय सोईस्कर व वेळेत सेवा प्रदान करतात. सन २०१२ पासून आजपर्यंत 'उन्नती' ने ५०,००० पेक्षा अधिक महिलांना आर्थिक सेवा पुरवून त्यांच्या सध्याच्या राहणीमानावर सकारात्मक ठसे उमटवले आहेत.

Date	18 January, 2020
Publication	Prahaar
Edition	Mumbai, Maharashtra
Page No.	6

महिलांच्या 'उन्नती'साठी कटिबद्ध : शोभा धारगे

» मुंबई (प्रतिनिधी) :

शून्यातून विश्व निर्माण करणाऱ्या शोभा धारगे यांची 'उन्नती मायक्रोफीन प्रायव्हेट लिमिटेड' ही महाराष्ट्रात काम करणारी अग्रेसर एन-बी-एफ-सी एम.एफ.आय. (सूक्ष्म वित्त पुरवठा) कंपनी असून आपल्या शाखांद्वारे महाराष्ट्रातल्या ५ जिल्ह्यांमध्ये कार्यरत आहेत. कमी उत्पन्न असणाऱ्या कुटुंबांना कोणत्याही तारणाशिवाय सोयीस्कर व वेळेत आर्थिक सेवा पुरविणाऱ्या एन-बी-एफ-सी एम.एफ.आय. या देशातील एकमात्र कंपनी आहेत. २०१२ पासून आजपर्यंत 'उन्नती'ने ५० हजारांपेक्षा अधिक महिलांना आर्थिक सेवा पुरवून त्यांना सक्षम केले आहे. 'उन्नती'चे 'मिशन २०२०'नुसार या वर्षी १ लाखापेक्षा अधिक कुटुंबांपर्यंत सेवा

पोहोचविण्याचे लक्ष्य आहे.

'उन्नती' ही भारतीय रिझर्व्ह बँकेकडे रजिस्टर्ड असून कर्ज रक्कम, व्याजदर, परतफेडीचा अवधी तसेच आर.बी.आय.ने ठरवलेल्या नियमावलीची काटेकोर अंमलबजावणी करते. महिलांना आर्थिकदृष्ट्या सक्षम करण्यासाठी 'उन्नती'ने मदत केली आहे. परंतु त्यांच्या मुलाबाळांच्या शिक्षण वाढीसाठी हातभार लावला आहे. भारत सरकारच्या आर्थिक धोरणानुसार ज्या कुटुंबांना बँकिंग सेवेचा लाभ घेता येत नाही अशा कुटुंबांपर्यंत बँकिंग सेवा पुरविण्याचे कार्य 'उन्नती' करत आहे, असे शोभा धारगे यांनी सांगितले. आपल्याप्रमाणेच समाजातील अन्य महिलांची प्रगती व्हावी यासाठीच आपले कार्य सुरू असल्याचेही धारगे यांनी स्पष्ट केले.

Date	17 January, 2020
Publication	Shivner
Edition	Mumbai, Maharashtra
Page No.	3

महिला लघु उद्योगांना आशेचा किरण 'उन्नती'

मुंबई, घाटकोपर, येथे राहणाऱ्या सौ.शोभा घाले यांच्या समोर आपल्या पतीच्या आकस्मिक अपघाती अपंगत्वानंतर घराचा आर्थिक गाडा व मुलांचे शिक्षण कसे पार पडावे हा बिकट प्रश्न होता. 'उन्नती' बदल माहिती मिळाल्या नंतर कर्ज घेऊन त्यांनी गोळ्या, बिस्किटे, व खाद्य पदार्थ यांचा छोटासा व्यवसाय सुरू केला व त्यातून त्यांना उत्पन्न सुरू झाले, दिवसेंदिवस व्यवसाय वाढ झाल्यामुळे त्यांच्यात एक आत्मविश्वास निर्माण झाला, त्यांनी वेळोवेळी उन्नती मधून वाढीव कर्ज घेऊन त्यांच्या व्यवसायास आवश्यक असणारी सामग्री विकत घेतली. त्यातून त्यांच्या व्यवसायास उत्तरोत्तर वाढत गेला. आज त्या त्यांच्या व्यवसायातून दिवसागणिक प्रत्येकी रुपये ५०० ते ६०० एवढा

नफा कमावतात, येणाऱ्या उत्पन्नामधूनच त्यांनी आपल्या मुलांचे शिक्षण पूर्ण केले. आज त्यांनी त्यांच्या मिळकतीमधून त्यांचे स्वतःचे राहते घर दुरुस्त केले व व्यवसायासाठी आवश्यक असणारे लायसन्स हि काढले आहे, तसेच त्यांची मुले हि नोकरी करून त्यांना आर्थिक हातभार लावत आहे.

शोभाताई भावनिक होऊन म्हणतात, ज्याप्रमाणे आज माझी 'उन्नती' झाली त्याप्रमाणे इतर महिलांची उन्नती व्हावी.

'उन्नती' मायक्रोफोन प्रत्येकट लिमिटेड 'महाराष्ट्रात काम करणारी अग्रेसर एन-बी-एफ-सी एम.एफ.आय (NBFC-MFI) (सूक्ष्म वित्त पुरवठा) कंपनी असून आपल्या शाखांद्वारे ५ महाराष्ट्रातल्या जिल्ह्यांमध्ये कार्यरत आहेत.

(NBFC-MFI) ह्या देशातील एकमात्र कंपन्या आहेत ज्या कमी कमी उत्पन्न असणाऱ्या कुटुंबांना आर्थिक सेवा ह्या कोणत्याही तारणाशिवाय सोईस्कर व वेळेत सेवा प्रदान करतात.

सन २०१२ पासून आजपर्यंत 'उन्नती' ५०,००० पेक्षा अधिक महिलांना आर्थिक सेवा पुरवून त्यांच्या सध्याच्या राहणीमानावर सकारात्मक ठसे उमटवले आहेत. 'उन्नती' हि कमी उत्पन्न असणाऱ्या कुटुंबांना असुरक्षित कर्ज सेवा प्रदान करीत असून त्यांच्या 'मिशन २०२०' नुसार त्यांना हि सेवा सन २०२० पर्यंत १,००,००० व त्यापेक्षा अधिक कुटुंबापर्यंत पोहचवायची आहे.

'उन्नती' हि भारतीय रिसर्व बँक (आर.बी.आय.) कडे रजिस्टर असून आर.बी.आय ने कर्ज रकम

, व्याजदर त्या कर्जाचा अवधी तसेच आर.बी.आय ने ठरवलेल्या फेयर प्रॅक्टिस कोड (नियमावली) ची काटेकोर अंमलबजावणी करते, 'उन्नती' ने त्यांच्या कार्यक्षेत्रातील महिलांच्या आर्थिक स्थितीमध्ये सुधारणा करणे, त्यांची स्वप्न पूर्ण करणे तसेच त्यांच्या जीवनाची गुणवत्ता वाढीसाठी मदत केली आहेच परंतु त्यांच्या मुलाबाळांच्या शिक्षण वाढीसाठी हातभार लावला आहे. 'उन्नती' ने आतापर्यंत ज्या लाभार्थ्यांना सूक्ष्म कर्ज पुरवठा केला आहे त्यामध्ये % भागीदारी हि महिलांनीच आहे. भारत सरकार च्या आर्थिक धोरणानुसार ज्या कुटुंबांना बँकिंग सेवेचा लाभ घेता येत नाही अश्या कुटुंबापर्यंत सदरहू कंपन्या बँकिंग सेवा पुरविण्याचे कार्य करत आहे.

Date	6 February, 2020
Publication	Punya Nagari
Edition	Kolhapur, Maharashtra
Page No.	3

मायक्रो फायनान्सने दिले आर्थिक स्वातंत्र्य

कोल्हापूर / प्रतिनिधी :

पतपुरवठ्याचे औपचारिक स्रोत आणि होणारा कर्ज पुरवठा यातील तफावतीतुळे मायक्रो फायनान्सची सुरुवात झाली. सप्टेंबर २०१९ पर्यंत भारतात २.९८ कोटीपेक्षा जास्त कर्जदारांना पतपुरवठा केला असून एकंदर रुपये ६३ हजार ८६९ कोटीपेक्षा अधिक पतपुरवठा केलेला आहे. राज्यात २४ लाखांपेक्षा जास्त महिला कर्जदारांनी मायक्रो फायनान्सकडून कर्ज घेतले असून बहुतांश महिला यशस्वी उद्योजक बनल्या आहेत. या महिला उत्पन्नाचे उपक्रम सुरू करून त्यांना त्यांची स्वप्ने पूर्ण करण्याची संधी मिळाली आणि त्याचबरोबर त्यांचे जीवनमानही उंचावले गेले.

Date	30 January, 2020
Publication	Samaj
Edition	Kolhapur, Maharashtra
Page No.	3

मायक्रोफायनान्सने दिले आर्थिक स्वातंत्र्य

कोल्हापूर दि. २९ : भार- , संस्था समाजातील अल्प उत्पन्न आणि आर्थिकदृष्ट्या बंघित घटक, ज्यांना एरवी आर्थिक सेवा उपलब्ध नसतात, यांना जबाबदारीने आणि पारदर्शक पद्धतीने कर्जपुरवठा करतात. भारतात छोटे व्यवसाय, विशेषतः जे महिलांद्वारे चालविले जातात, अपयशी होण्याच्या अनेक कारणांपैकी एक महत्वाचे कारण म्हणजे अर्धपुरवठ्याचा अभाव हे होय. या उद्योगाने आपल्या कर्जदारांमध्ये स्वावलंबन आणि उद्योजकता या गुणांचा विकास होण्यासाठी बाजाराभिमुखता धोरण स्वीकारलेले आहे. छद्म-चक्रवी ने ३० सप्टेंबर २०१९ पर्यंत संपूर्ण भारतात २.९८ करोड पेक्षा जास्त कर्जदारांना पतपुरवठा केला असून एकंदर रु. ६३,८६९ करोड पेक्षा अधिक पतपुरवठा केलेला आहे. खेड्यातील रहिवासी असलेल्या अशाच एका महत्वाकांक्षी कर्जदार अनिता अहिरवार यांची कथा ही ग्रामीण भारतातील परिस्थितीचे, जेथे अधिकाधिक महिला स्वतःच्या पायावर उभ्या राहून अग्रेसर होत आहेत आणि आणि इतरांसाठी प्रेरणास्थान आणि आदर्श बनत आहेत, घोटक आहे. अनिता यांच्या कुटुंबाची आर्थिक स्थिती खूपच दयनीय होती; अगदी घरातील मुलभूत गरजा भागविण्याइतपत देखील पुरेसे उत्पन्न नव्हते. परंतु एड्क या लघु वित्तीय बँकेच्या मदतीने तिने फूलशेती व्यवसायास सुरुवात केली आणि काही एकर जमीन जिथे तिने झेंडू, जरबेरा, अस्टर इत्यादीची लागवड केली ती तिने ठोक आणि किरकोळ विक्रेत्यांना भाड्याने दिली. अनिता गेल्या दहा वर्षांपासून एड्क या लघु वित्तीय बँकेशी निगडित असून त्या काळात त्याच्या कुटुंबाची आर्थिक स्थिती केवळ सुधारलीच नाही तर या बँकेच्या सहकार्याने सुरु असलेल्या व्यवसायातून मिळणार्या नफ्यातून अनिता स्वतःचे घर आणि जमीन खरेदी करू पाहत आहेत.

या क्षेत्रात छद्म-चक्रवी यांशिवाय अन्य संस्था जसे की बँका, लघु वित्तीय बँका, गैरबँकिंग मंडळे कार्यरत आहेत. चक्रवृद्ध हे त्यांचे प्रतिनिधित्व करणारी औद्योगिक संघटना आहे. हि संघटना छद्म-चक्रवी साठी भारतीय रिजर्व बँक मान्यताप्राप्त स्व-नियामक मंडळ आहे. या मायक्रोफायनान्स

संस्था समाजातील अल्प उत्पन्न आणि आर्थिकदृष्ट्या बंघित घटक, ज्यांना एरवी आर्थिक सेवा उपलब्ध नसतात, यांना जबाबदारीने आणि पारदर्शक पद्धतीने कर्जपुरवठा करतात.

भारतात छोटे व्यवसाय, विशेषतः जे महिलांद्वारे चालविले जातात, अपयशी होण्याच्या अनेक कारणांपैकी एक महत्वाचे कारण म्हणजे अर्धपुरवठ्याचा अभाव हे होय. या उद्योगाने आपल्या कर्जदारांमध्ये स्वावलंबन आणि उद्योजकता या गुणांचा विकास होण्यासाठी बाजाराभिमुखता धोरण स्वीकारलेले आहे. छद्म-चक्रवी ने ३० सप्टेंबर २०१९ पर्यंत संपूर्ण भारतात २.९८ करोड पेक्षा जास्त कर्जदारांना पतपुरवठा केला असून एकंदर रु. ६३,८६९ करोड पेक्षा अधिक पतपुरवठा केलेला आहे. खेड्यातील रहिवासी असलेल्या अशाच एका महत्वाकांक्षी कर्जदार अनिता अहिरवार यांची कथा ही ग्रामीण भारतातील

परिस्थितीचे, जेथे अधिकाधिक महिला स्वतःच्या पायावर उभ्या राहून अग्रेसर होत आहेत आणि आणि इतरांसाठी प्रेरणास्थान आणि आदर्श बनत आहेत, घोटक आहे. अनिता यांच्या कुटुंबाची आर्थिक स्थिती खूपच दयनीय होती; अगदी घरातील मुलभूत गरजा भागविण्याइतपत देखील पुरेसे उत्पन्न नव्हते. परंतु एड्क या लघु वित्तीय बँकेच्या मदतीने तिने फूलशेती व्यवसायास सुरुवात केली आणि काही एकर जमीन जिथे तिने झेंडू, जरबेरा, अस्टर इत्यादीची लागवड केली ती तिने ठोक आणि किरकोळ विक्रेत्यांना भाड्याने दिली. अनिता गेल्या दहा वर्षांपासून एड्क या लघु वित्तीय बँकेशी निगडित असून त्या काळात त्याच्या कुटुंबाची आर्थिक स्थिती केवळ सुधारलीच नाही तर या बँकेच्या सहकार्याने सुरु असलेल्या व्यवसायातून मिळणार्या नफ्यातून अनिता स्वतःचे घर आणि जमीन खरेदी करू पाहत आहेत.

Date	4 February, 2020
Publication	Mahasatta
Edition	Kolhapur, Maharashtra
Page No.	3

मायक्रो फायनान्समुळे आर्थिक समावेशकता चळवळीला वेग

मुंबई, ता. ३-

भारतात १९८० च्या दशकाच्या उत्तरार्धात पात्र नसलेल्या आणि अल्प उत्पन्न असलेल्या घटकांना उपलब्ध असलेले पतपुरवठ्याचे औपचारिक स्रोत आणि होणारा कर्जपुरवठा यातील तफावत लक्षात घेऊन मायक्रो फायनान्सची सुरुवात झाली. गैर बँकिंग वित्तीय मंडळे मायक्रोफायनान्स संस्था अगदी आरंभापासूनच भारत सरकारचा आर्थिक समावेशकतेचा कार्यक्रम पुढे करून चालल्यामुळे आर्थिक समावेशकता चळवळीने चांगलाच वेग घेतलेला आहे.

या क्षेत्रात अन्य संस्था जसे की बँका, लघु वित्तीय बँका, गैर बँकिंग मंडळे कार्यरत आहेत. एफआयएन

हे त्यांचे प्रतिनिधित्व करणारी औद्योगिक संघटना आहे. हि संघटना एबीएफसी एमएफआयएससाठी भारतीय रिझर्व्ह बँक मान्यताप्राप्त स्वनियामक मंडळ आहे. या मायक्रोफायनान्स संस्था समाजातील अल्प उत्पन्न आणि आर्थिकदृष्ट्या वंचित घटक, ज्यांना एरवी आर्थिक सेवा उपलब्ध नसतात, यांना जबाबदारीने आणि पारदर्शक पद्धतीने कर्जपुरवठा करतात.

भारतात छोटे व्यवसाय, विशेषतः जे महिलांद्वारे चालविले जातात, अपयशी होण्याच्या अनेक कारणांपैकी एक महत्वाचे कारण म्हणजे अर्थपुरवठ्याचा अभाव हे होय. या उद्योगाने आपल्या कर्जदारांमध्ये स्वावलंबन आणि

उद्योजकता या गुणांचा विकास होण्यासाठी बाजाराभिमुखता धोरण स्वीकारलेले आहे. एबीएफसी एमएफआयएसने ३० सप्टेंबर २०१९ पर्यंत संपूर्ण भारतात २.९८ करोडपेक्षा जास्त कर्जदारांना पतपुरवठा केला असून एकंदर रु.६३,८६९ करोडपेक्षा अधिक पतपुरवठा केलेला आहे. महाराष्ट्रामध्ये २४ लाखापेक्षा जास्त महिला कर्जदारांनी मायक्रोफायनान्स कडून कर्ज घेतले असून बहुतांश महिला यशस्वी उद्योजक बनल्या आहेत. हे लक्षणीय आहे की, मायक्रोफायनान्स या महिला कर्जदारांचे जीवन उत्पन्नाचे उपक्रम सुरू करून त्यांना त्यांची स्वप्ने पूर्ण करण्याची संधी मिळाली आणि त्याचबरोबर त्यांचे जीवनमानही उंचावले गेले.

Date	29 January, 2020
Publication	Lokneta
Edition	Kolhapur, Maharashtra
Page No.	2

मायक्रोफायनान्सने दिले आर्थिक स्वातंत्र्य

भारतात १९८० च्या दशकाच्या उत्तरार्धात पात्र नसलेल्या आणि अल्प उत्पन्न असलेल्या घटकांचा उपलब्ध असलेले पतपुरवठा यांचे औपचारिक स्त्रोत आणि होणार करीतुल्य यांतील तफावत लक्षात घेऊन मायक्रोफायनान्सची सुरुवात झाली. गैर-बँकिंग विधीय मंडळे - मायक्रोफायनान्स संस्था अगदी आरंभापासूनच भात सरकारचा आर्थिक समर्थनाने कार्यरत पुढे करून घालण्यात आले. या क्षेत्रात NBFC-MFIs यांच्या अर्थसहाय्य अर्थसहाय्य संस्था जसे की बँका, लघु वित्तीय संस्था, गैरबँकिंग मंडळे कार्यरत आहेत. MFIs हे त्यांचे प्रतिनिधित्व करणारे औद्योगिक संघटना आहे. हि संघटना NBFC-MFIs साठी भारतीय रिझर्व बँक मान्यताप्राप्त स्व-निर्वाहक मंडळ आहे. या मायक्रोफायनान्स संस्था समाजातील अल्प उत्पन्न आणि आर्थिकदृष्ट्या वंचित घटक, त्यांना एवढी आर्थिक सेवा उपलब्ध नसताना, यांना जबाबदारीने आणि चारदरीक पद्धतीने करीतुल्य करतात.

भारतात छोटे व्यवसाय, विशेषतः जे महिलांमध्ये पातळिले जातात, अत्यंतच होण्याच्या अनेक कारणांपैकी एक महत्वाचे कारण म्हणजे अर्थपुरवठ्याचा अभाव हे होय. या उद्योगाने आपल्या करिंदारांमध्ये स्वावलंबन आणि उद्योजकता या गुणांचा विकास होण्यासाठी वाजाराभिमुखता प्रेरण स्वीकारलेले आहे. NBFC-MFIs ने ३० सप्टेंबर २०१९ पर्यंत संपूर्ण भारतात २.९८ कोटी पेसा जास्त करिंदारांना पतपुरवठा केला असून एकूण रु. ६३,८६९ कोटी पेसा अधिक पतपुरवठा केलेला आहे.

खेड्यातील रहिवासी असलेल्या अशाच एका महत्वाकांक्षी करिंदार अनिता अहिरवत यांची कथा ही ग्रामीण भारतातील परिस्थितीचे, जे ये अधिकारीक महिला स्वतःच्या पायावर उभ्या राहून उत्पन्न होत आहेत आणि आणि इतरांसाठी प्रेरणास्त्रोत आणि आदर्श बनत आहेत, प्रोत्साहित आहे. अनिता यांच्या कुटुंबातील आर्थिक स्थिती खूपच दयनीय होती; अगदी घरातील मुलभूत गरजा भागविण्यातूनच देखील पुढे उत्पन्न नव्हते. पण ESF या लघु वित्तीय बँकेच्या

मदतीने तिने फूटसोती व्यवसायास सुरुवात केली आणि काही एक जमीन तिथे तिने ड्रेड, कापूस, असुर इत्यादीची लागवड केली ती तिने ब्रोम आणि किरकोळ किटोर्यांना भाड्याने दिली. अनिता गेल्या दहा वर्षांपासून ESF या लघु वित्तीय बँकेची मिमडीत असून त्या काळात त्यांच्या कुटुंबाची आर्थिक स्थिती केवळ सुधारलेली नाही तर या बँकेच्या सहकार्याने सुरू असलेल्या व्यवसायातून मिळणाऱ्या नफ्यातून अनिता स्वतःचे घर आणि जमीन खरेदी करू पाहत आहेत.

अनिता म्हणते, मला आनंद वाटतो की माझी मुले एका चांगल्या शाळेत जात आहेत आणि त्यांच्या महत्वाच्या गरजांची पूर्तता करण्यास मी आज समर्थ आहे. आज अजूनही जे चांगले जीवन जगण्यास मिळते आहे त्याबद्दल मी ESF ची कर्णी आहे.

अशीच महिला सवलीकरणाची कथा आहे आशा मनोहर सामंत यांची. रस्त्याच्या काटेला बसून भाजीपाला विकणे हे आशा यांचे उद्दिष्टाने साधन होते. पण मंडईतून भाजीपाला विकत घेण्यासाठी आशा यांना धडकल्याची, रोख

रकमेची, अत्यंतच होती. दुर्दैवाने, आशा करीत असलेला व्यवसाय पारंपारिक आर्थिक संस्थांकडून कोणत्याही प्रकारचे रोखीने कर्ज मिळण्यात पात्र ठरत नाही.

आशा यांनी अनेक कर्जांचा उपयोग घ्यायला मिळालेला पण त्यांच्या प्रमाणात पात्रीपासून खोटे करवासाठी चालूपासून केला आणि त्याचोणे आशा यांचे व्यवसायातील केवळ उलाढालच नाही तर त्यातून मिळणाऱ्या नफ्याचे प्रमाणाही वाढते.

मिळालेल्या नफ्यातून त्या आता रस्त्याच्या काटेला असलेला आपला व्यवसाय एक मोठ्या स्थळी जालेला स्थलांतरित करण्याच्या विचारात आहेत. आशा यांचा व्यावसायिक विकास आणि महत्वाकांक्षा त्यांच्या सुधारलेल्या जीवनापासून दिसून येतो. भावी शिक्षित आधुनिक भारताच्या अजून यांनी आशा आपल्या मुलीची शाळेत नोंदणी केलेली आहे.

आशा समतुल्य, सल्ले असे वाटायचे की मी कोणीच नाही आणि मला कर्ज वागण्याचा अधिकार नाही! आणि वाचवेळी त्यांना स्वतःची मायक्रोफायनान्स

कडून प्रस्तावित संशुद्ध दृष्टीय घटाना दिले जाण्याचा कर्ज बदल मोहिती मिळाली. स्वतःने माझ्यावर, माझ्या समोर आणि माझ्या व्यावसायिकांच्या कल्पनेवर दाखवलेला विश्वास पांघुळी मी स्वतःची कडून कर्ज घेण्यात पात्र ठरते आणि हे सर्व करण्याची शक्ती मलायामुळे मिळते आहे. कोणाचे दान नाही तर माझा अधिकार म्हणून मला अर्थसहाय्य मिळते आहे त्याचा मला अतिशय आनंद होतो आहे. हिच भावना १,८०,००० महिना त्या स्वतःची मायक्रोफायनान्स कडून जवळपास रु. ३८० करोड रकमेच्या करीतुल्यने लढावित झालेल्या आहेत त्यांनी व्यक्त केले.

महाराष्ट्रात २४ लाख पेसा जास्त महिला करिंदारांनी मायक्रोफायनान्स कडून कर्ज घेतले असून बहुतांश महिला यशस्वी उद्योजक बनल्या आहेत. हे लक्षणीय आहे की, मायक्रोफायनान्स या महिला कर्जदारांचे जीवन उत्पन्नाचे प्रथम सुरू करून त्यांना त्यांची स्वतःची पूर्ण करण्याची संधी मिळाली आणि त्याचबरोबर त्यांचे जीवनमानही उंचावले गेले.

Date	5 February, 2020
Publication	Kesari
Edition	Kolhapur, Maharashtra
Page No.	7

मायक्रोफायनान्सने दिले आर्थिक स्वातंत्र्य

कोल्हापूर : भारतात १९८० च्या दशकाच्या उत्तरार्धात पात्र नसलेल्या आणि अल्प उत्पन्न असलेल्या घटकांना उपलब्ध असलेले पतपुरवठ्याचे औपचारिक स्रोत आणि होणारा कर्जपुरवठा यांतील तफावत लक्षात घेऊन मायक्रोफायनान्सची सुरुवात झाली. गैर-बँकिंग वित्तीय मंडळे - मायक्रोफायनान्स (NBFC-MFIs) संस्था अगदी आरंभापासूनच भारत सरकारचा आर्थिक समावेशकतेचा कार्यक्रम पुढे करून चालल्यामुळे आर्थिक समावेशकता चळवळीने वेग घेतलेला आहे. भारतात छोटे व्यवसाय, जे महिलांद्वारे चालविले जातात, अपयशी होण्याच्या अनेक कारणांपैकी महत्वाचे कारण म्हणजे अर्थपुरवठ्याचा अभाव हे होय. या उद्योगाने आपल्या कर्जदारांमध्ये स्वावलंबन आणि उद्योजकता या गुणांचा विकास होण्यासाठी बाजाराभिमुखता धोरण स्वीकारलेले आहे. NBFC-MFIs ने ३० सप्टेंबर २०१९ पर्यंत संपूर्ण भारतात २.९८ करोडपेक्षा जास्त कर्जदारांना पतपुरवठा केला असून रु. ६३,८६९ करोडपेक्षा अधिक पतपुरवठा केलेला आहे.

Date	25 January, 2020
Publication	Sattyawadi
Edition	Kolhapur, Maharashtra
Page No.	4

मायक्रोफायनान्सने दिले आर्थिक स्वातंत्र्य

भारतात १९८० ह्या दशकाच्या उत्तरार्धात पात्र नसलेल्या आणि अल्प उत्पन्न असलेल्या घटकांना उपलब्ध असलेले पतपुरवठ्याचे औपचारिक स्त्रोत आणि होणारा कर्जपुरवठा यांतील लफायत लक्षात घेऊन मायक्रोफायनान्सची सुरुवात झाली. गैर-बैंकेन वितीय मंडळे मायक्रोफायनान्स संस्था अगदी आरंभापासूनच भारत सरकारचा आर्थिक समावेशकतेचा कार्यक्रम पुढे करून घालल्यामुळे आर्थिक समावेशकता घडवलीचे चांगलाच वेग घेतलेला आहे.

या क्षेत्रात यांशिवाय अन्य संस्था जसे की बँका, लघु वितीय बँका, गैरबैंकिंग मंडळे कार्यरत आहेत. हे त्यांचे प्रतिनिधित्व करणारी औद्योगिक संघटना आहे. हि संघटना - साठी भारतीय रिजर्व बँक मान्यताप्राप्त स्व-नियामक मंडळ आहे. या मायक्रोफायनान्स संस्था समाजातील अल्प उत्पन्न आणि आर्थिकदृष्ट्या वंचित घटक, ज्यांना एवढी आर्थिक सेवा उपलब्ध नसतात, यांना जबाबदारीने आणि पारदर्शक पद्धतीने कर्जपुरवठा करतात.

भारतात छोटे व्यवसाय, विशेषतः जे महिलांकरिता चालविले जातात, अप्रत्यक्ष होण्याच्या अनेक कारणांमुळे एक महत्वाचे कारण म्हणजे अर्थपुरवठ्याचा अभाव हे होय. या उद्योगाने आपल्या कर्जदारांमध्ये स्वावलंबन आणि उद्योजकता या गुणांचा विकास होण्यासाठी बाजारपिठे घोरण स्वीकारलेले आहे. - ने ३० सप्टेंबर २०१९ पर्यंत संपूर्ण भारतात २.९८ कोटी पेक्षा जास्त कर्जदारांना पतपुरवठा केला असून एवढे रु. ६३,८६९ कोटी पेक्षा अधिक पतपुरवठा केलेला आहे.

खेड्यातील रहिवासी असलेल्या अशाच एका महत्वाकांक्षी कर्जदार अनिता अहिरवार यांची कथा ही ग्रामीण भारतातील परिस्थितीचे, जेथे अधिकाधिक महिला स्वतःच्या पायावर उभ्या राहून अग्रेसर होत आहेत आणि आणि इतरांसाठी प्रेरणास्थान आणि आदर्श बनत आहेत, छोटकरी आहे. अनिता यांच्या कुटुंबाची आर्थिक स्थिती खूपच दयनीय होती; अगदी घरातील मुलभूत गरजा भागविण्याइतक्या देखील पुरेशी उत्पन्न नव्हते. परंतु या लघु वितीय बँकेच्या मदतीने तिने फूलसोती व्यवसायात सुरुवात केली आणि काही एकर जमीन जिथे तिने शेण्डू, जखेरा, अस्तर इत्यादींची लागवड केली ती तिने लोक आणि किरकोळ विक्रेत्यांना भाड्याने दिली. अनिता गेल्या दहा वर्षांपासून या लघु वितीय बँकेची निगडीत असून त्या काळात त्यांच्या कुटुंबाची आर्थिक स्थिती वेगळी सुधारलीच नाही

तर या बँकेच्या सहकार्याने सुरू असलेल्या व्यवसायातून मिळणाऱ्या नफ्यातून अनिता स्वतःचे घर आणि जमीन खरेदी करू पाहता आहे.

अनिता म्हणते, मला ज्ञानंद काढणे की माझी मुले एवढा चांगल्या शाळेत जात आहेत आणि त्यांच्या महत्वाच्या गरजांची पूर्तता करण्यास मी आज समर्थ आहे. आज आम्हाला जे चांगले जीवन जगण्यास मिळते आहे त्याबद्दल मी खूपी आभारी आहे.

अशीच महिला सवलीवनाची कथा आहे अशा मनोहर सापेक्ष मांभी. स्वतःच्या कडेला बसून भाजीपाला विकणे हे अशा यांचे उत्पत्तीसाठीचे साधन होते. पावक मंडळीतून भाजीपाला घेऊन घेण्यासाठी आशा यांना भांडवलच नाही तर एकमेकी, आवश्यकता होती. दुर्दैवाने, आशा करीत असलेला व्यवसाय पारंपारिक आर्थिक संस्थांना देऊन कोणत्याही प्रकारचे रोखीचे कर्ज मिळवण्यास पात्र ठरत नाही.

आशा यांनी प्रत्येक कर्जाचा उपयोग पावक किमतीत मोठ्या प्रमाणात भाजीपाला खरेदी करण्यासाठी वाटुकीने केला आणि त्यायोगे आशा यांचे व्यवसायातील वेगळे उलाढालच नाही तर त्यातून मिळणाऱ्या नफ्याचे प्रमाणही वाढले. मिळालेल्या नफ्यातून त्या आता स्वतःच्या कडेला असलेला आपला व्यवसाय एक मोठ्या स्थायी जागेत स्थलांतरित करण्याच्या विचारात आहेत. आशा यांचा व्यावसायिक विकास आणि महत्वाकांक्षा त्यांच्या सुधारलेल्या जीवनमानातून दिसून येते. भावी शिक्षित आयुष्याने भारलेल्या

आशा यांनी आता आपल्या मुलीची शाळेत नोंदणी केलेली आहे.

आशा सांगतात, मला जसे वाटायचे की मी कोणीच नाही आणि मला कर्ज मागण्याचा अधिकार नाही! आणि यापेक्षा त्यांना स्वतःची मायक्रोफायनान्स वळून प्रस्तावित रांगुळ द्याव्या गटांना दिले जाणाऱ्या कर्जा बद्दल गोष्टी मिळाली. स्वतःची माझ्यावर, माझ्या बागेवर आणि माझ्या व्यावसायिकांच्या कल्पनेवर दाखवलेला विश्वास यांमुळे मी स्वतःची कर्ज कर्ज घेण्यास पात्र ठरले आणि हे सर्व करण्याची शक्ती मलायामुळेच मिळते आहे. कोणाचे दान नाही तर माझा अधिकार म्हणून मला अर्जसत्ताय मिळते आहे याचा मला अतिशय आनंद होतो आहे. हिच भावनाजस्य १,८०,००० महिला ज्या स्वतःची मायक्रोफायनान्स वाडून जावळपारा रु. ३८० करोड रुकमेच्या कर्जपुरवठ्याने लाभान्वित झालेल्या आहेत त्यांनी व्यक्त केली.

महाराष्ट्रामध्ये २४ लाखापेक्षा जास्त महिला कर्जदारांनी मायक्रोफायनान्स वाडून कर्ज घेतले असून बहुतांश महिला यशस्वी उद्योजक बनल्या आहेत. हे लक्षणीय आहे की, मायक्रोफायनान्स या महिला कर्जदारांचे जीवन उत्पन्नाचे उपक्रम सुरू करून त्यांना त्यांची स्वप्ने पूर्ण करण्याची संधी मिळाली आणि त्याचबरोबर त्यांचे जीवनमानही उंचावले गेले.

निर्भया बलात्कार प्रकरण: नराधमांविरुद्ध डेथ वॉरंट देणाऱ्या न्यायाधीशाची तडकाफडकी बदली

नवी दिल्ली, ता. २४ - निर्भया बलात्कार प्रकरणातील दोषींना डेथ वॉरंट जारी करणारे अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश सतीश कुमार अरोरा यांची तडकाफडकी बदली करण्यात आली आहे. न्यायाधीश अरोरा यांना एक वर्षासाठी प्रतिनिधित्वाच्या आधारावर अतिरिक्त रजिस्ट्रार म्हणून सर्वोच्च न्यायालयात स्थानांतरित करण्यात आले आहे. न्यायाधीश सतीश अरोरा यांनी दिवाळी २०१२ साली झालेल्या निर्भया सामूहिक बलात्कार व हत्याकांडातील पुढीलप्रमाणे काही विसांपूर्वी केथ वॉरंट जारी केले होते.

दिवाळीचे उपराज्यपाल अजित वैजल यांनी माल पुरवणी निर्भया सामूहिक बलात्कार व हत्या प्रकरणातील गुन्हेगार मुकेश कुमार यांचा खेचा अर्ज फेटाळल्यानंतर अखेर आता दोषींना फाशी देण्याच्या तारखेवर शिक्षागोर्तब करण्यात आला आहे. १ फेब्रुवारीला निर्भयाच्या ४ अठराव्या फाशी देण्यात येणार आहे. या प्रकरणात सर्व आरोपींची दया याचिका फेटाळल्यानंतर अखेर सत्र न्यायालयाने दोषींविरुद्ध केथ वॉरंट जारी केले आहे. १ फेब्रुवारीला सकाळी ६

वाजता नराधमांना फाशी देण्यात येणार आहे.

आता आरोपींना १ फेब्रुवारी रोजी सकाळी ६ वाजता फाशी देण्यात येईल. पटियाला हाऊस कोर्टाने नवीन तारीख जाहीर केली. अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश सतीश कुमार हे अरोरा खटल्यातील दोषी मुकेश कुमार सिंग यांच्या याचिकेवर सुनावणी करीत होते आणि फाशीची तारीख २२ जानेवारीपासून पुढे ढकलण्यासाठी प्रयत्न करीत होते. यापूर्वी, सिंग जेल अधिकाऱ्यांनी निर्भया प्रकरणातील चार दोषींवर फाशीची शिक्षा परत देण्याची मागणी दिवाळी कोर्टाकडे केली होती.

दोषींवर कोणते पर्याय शिवाल आहेत मुळे शशी दया याचिका राष्ट्रपतींकडून फेटाळल्यानंतर त्यांच्याकडे कोमताही पर्याय उरलेला नाही. अक्षय आणि पवन या दोन दोषींना अजूनही क्युरेटिव्ह याचिका दाखल करण्याचा पर्याय आहे. अक्षय, पवन आणि विनयकडे राष्ट्रपती रामनाथ कोविंद यांच्याकडे दया याचिका दाखल करण्याचा घटनात्मक पर्याय आहे.

Date	25 January, 2020
Publication	Navsandesha
Edition	Kolhapur, Maharashtra
Page No.	4

मायक्रोफायनान्सने दिले आर्थिक स्वातंत्र्य

वहेन्तसूतः षष्ठ्या १९८० च्या दशकाच्या उत्तरार्धात पात्र नसलेल्या आणि अल्प उत्पन्न असलेल्या घटकाना उपलब्ध असलेले पतपुरवठ्याचे औपचारिक स्वरूप आणि होमारा कर्जपुरवठा यंत्रणेला तफावत लक्षात घेऊन मायक्रोफायनान्सची सुरुवात झाली. गैर-बँकिंग वित्तीय मंडळे - मायक्रोफायनान्स (छद्मछत्र-चक्रछी)संस्था आदी आरंभापासूनच भारत सरकारचा आर्थिक समावेशकतेचा कार्यक्रम पुढे करून चालूचालूले आर्थिक समावेशकता प्रकल्पांनी चांगलाच वेग घेतलेला आहे.

या क्षेत्रात छद्मछत्र-चक्रछी यंत्रणेच्या अन्व संस्था जसे की बँक, लघु वित्तीय बँक, गैरबँकिंग मंडळे कार्यरत आहेत. चक्रछत्र हे त्यांचे प्रतिनिधित्व करणारी औद्योगिक संघटना आहे. हि संघटना छद्मछत्र-चक्रछी साठी भारतीय रिजर्व बँक मान्यताप्राप्त स्व-नियामक मंडळ आहे. या मायक्रोफायनान्स संस्था समाजातील अल्प उत्पन्न आणि आर्थिकदृष्ट्या वंचित घटका, ज्यांना एरवी आर्थिक सेवा उपलब्ध नसतात, यांना जबाबदारीने आणि पारदर्शक पद्धतीने कर्जपुरवठा करतात.

भारतात छोटे व्यवसाय, विशेषतः जे महिलांद्वारे चालविले जातात, अपयशी होण्याच्या अनेक कारणांपैकी एक महत्वाचे कारण म्हणजे अर्थपुरवठ्याचा अभाव हे होय. या उद्योगाने आपल्या कर्जदारांमध्ये स्वावलंबन आणि उद्योजकता या गुणांचा विकास होण्यासाठी बाजारातमिमुखता घोरण स्वीकारलेले आहे. छद्मछत्र-चक्रछी ने ३० सप्टेंबर २०१९ पर्यंत संपूर्ण भारतात २.९८ कोटी पेक्षा जास्त कर्जदारांना पतपुरवठा केला असून एकंदर रु. ६३,८६९ कोटी पेक्षा अधिक पतपुरवठा केलेला आहे.

खेड्यातील रहिवासी असलेल्या अशाच एक महत्वाकांक्षी कर्जदार

अनिता जीतलकर यांनी कर्मा ही मायक्रोफायनान्सची संस्था जी आर्थिकदृष्ट्या महिला स्वतःच्या पायावर उभ्या राहून ओसर होत आहेत आणि आणि इतर संस्थांनी प्रेरणारथान आणि आदर्श बनत आहेत, टीकाक आहे. अनिता यांच्या मुदुंबाची आर्थिक दिवशी सुरुन दयनीय होती; अकदी परातील मुलभूत गरजा भरणिभ्याडतापत देखील पुढेले छत्र नव्हते. पंतु एका-क्रमा लघु वित्तीय बँकेच्या मदतीने तिने भूलसेली व्यवसायाचा सुरुवात केली आणि कधी एवढा जमीन दिले तिने शेड्ड, जखेच, अरंदर इत्यादींची लागवड केली ती तिने लोक आणि कितवतेक विवेचना भाळ्याने दिली. अनिता मेल्या दाण वर्षापासून एका-क्रया लघु वित्तीय बँकेली निगदीत असून त्या काळात त्यांच्या मुदुंबाची आर्थिक स्थिती वेळक सुधारलीच नाही तर या बँकेच्या सहकार्याने सुरु असलेल्या व्यवसायातून मिळणाऱ्या नफ्यातून अभिले स्वतःचे घर आणि जमीन खरेदी करून पाहत आहेत.

अनिता म्हणते, मला आनंद वाटतो की माझी मुले एक चांगल्या शाळेत जात आहेत आणि त्यांच्या महात्माच्या गरजांची पूर्तता करण्यात मी आज समर्थ आहे. आज आम्हाला जे चांगले जीवन जगण्यास मिळते आहे त्याबद्दल मी एका-क्रयाची ऋणी आहे.

अशीच महिला सबलीकरणाची कथा आहे आशा मनोहर सावंत यांची. रस्त्याच्या काठेला बसून माझीपाला विकणे हे आशा यांचे उदरनिर्वाहाचे साधन होते घाबुक मंडईतून भाजीपाला विकत घेण्यासाठी आशा यांना मांडवलाची, रोख तक्रारी, आवश्यकता होती. दुईकाने, आशा करीत असलेला व्यवसाय पारंपारिक आर्थिक संस्थांकडून कोणत्याही प्रकारचे रोखीचे कर्ज मिळण्यास पात्र ठरत नाही. आशा यांनी प्रत्येक कर्जाचा उपयोग घाबुक किमतीत मोठ्या प्रमाणात भाजीपाला खरेदी

करण्यासाठी वापरावेने केला आणि त्यामुळे अशा यांचे व्यवसायातील वेगळी चालचालच नाही तर जाकून मिळण्याची गरजाने प्रभावही काढले. मिळालेल्या नफ्यातून त्या आता रस्त्याच्या काठेत असलेला आपला व्यवसाय एका छोड्या रस्त्याी जावेत स्थलांतरित करण्याच्या विचारात आहेत, अशा यांचा व्यावसायिक विकास आणि महत्त्वकांक्षा त्यांच्या शुभारंभेच्या जीवनमानातून दिसून येते. माझी शिक्षित आमुष्याने गारलेल्या आशा यांनी आता आपल्या मुलीची शाळेत नोंदणी केलेली आहे. आशा सांगतात, मला असे वाटायचे की मी वनेणीच नाही आणि मला कर्ज पावण्याचा अधिकार नाही! आणि वाचवेली त्यांना स्वस्ती मायक्रोफायनान्स कडून प्रस्तावित संयुक्त दामित्व गटाना दिले जाणाऱ्या कर्जा बद्दल मोहिती मिळाली. स्वस्तीने माझ्यावर, माझ्या क्षमतेवर आणि माझ्या व्यावसायाच्या कल्पनेवर दाखवलेला विश्वास यांमुळे मी स्वस्ती कडून कर्ज घेण्यास पात्र ठरले आणि हे सर्व करण्याची शक्ती मलायामुळेच मिळते आहे. कोणाचे दान नाही तर माझा अधिकार म्हणून मला अर्थसहाय्य मिळते आहे याचा मला अतिशय आनंद होतो आहे. हिच भावनाअन्य १,८०,००० महिला ज्या स्वस्ती मायक्रोफायनान्स कडून जवळपास रु. ३८० कोटी रकमेच्या कर्जपुरवठ्याने लाभान्वित झालेल्या आहेत त्यांनी व्यक्त केला. महाराष्ट्रामध्ये २४ लाखापेक्षा जास्त महिला कर्जदारांनी मायक्रोफायनान्स कडून कर्ज घेतले असून बहुतांश महिला यशस्वी उद्योजक बनल्या आहेत. हे लक्षणीय आहे की, मायक्रोफायनान्स या महिला कर्जदारांचे जीवन उत्पन्नाचे उपक्रम सुरु करून त्यांना त्यांची स्वप्ने पूर्ण करण्याची संधी मिळाली आणि त्याचबरोबर त्यांचे जीवनमानही उंचावले गेले.

Date	25 January, 2020
Publication	Vartahsakti
Edition	Kolhapur, Maharashtra
Page No.	4

मायक्रोफायनान्सने दिले आर्थिक स्वातंत्र्य

भारतात १९८० च्या दशकाच्या उत्तरार्धात पात्र नसलेल्या आणि अल्प उत्पन्न असलेल्या घटकांना उपलब्ध असलेले पतपुरवठ्याचे औपचारिक स्त्रोत आणि होणारा कर्जपुरवठ्यांतील तफावत लक्षात घेऊन मायक्रोफायनान्सची सुरुवात झाली. गैर-बँकिंग वित्तीय मंडळे मायक्रोफायनान्स (NBFCMFIs) संस्था अगदी आरंभापासूनच भारत सरकारचा आर्थिक समावेशकतेचा कार्यक्रम पुढे करून घालल्यामुळे आर्थिक समावेशकता चळवळीने चांगलाच वेग घेतलेला आहे.

या क्षेत्रात NBFCMFIs यांशिवाय अन्य संस्था जसे की बँका, लघु वित्तीय बँका, गैरबँकिंग मंडळे कार्यरत आहेत. चक्रवर्त हे त्यांचे प्रतिनिधित्व करणारी औद्योगिक संघटना आहे. हि संघटना NBFC-MFIs साठी भारतीय रिजर्व बँक मान्यताप्राप्त स्व-नियामक मंडळ आहे. या मायक्रोफायनान्स संस्था समाजातील अल्प उत्पन्न आणि आर्थिकदृष्ट्या वंचित घटक, ज्यांना एरवी आर्थिक सेवा उपलब्ध नसतात, यांना जबाबदारीने आणि पारदर्शक पद्धतीने कर्जपुरवठा करतात.

भारतात छोटे व्यवसाय, विशेषतः जे महिलांद्वारे चालविले जातात, अपयशी होण्याच्या अनेक कारणांपैकी एक महत्वाचे कारण म्हणजे अर्थपुरवठ्याचा अभाव हे होय. या उद्योगाने आपल्या

कर्जदारांमध्ये स्वावलंबन आणि उद्योजकता या गुणांचा विकास होण्यासाठी बाजाराभिमुखता धोरण स्वीकारलेले आहे. NBFC-MFIs ने ३० सप्टेंबर २०१९ पर्यंत संपूर्णभारतात २.९८ करोड पेक्षा जास्त कर्जदारांना पतपुरवठा केला असून एकंदर रु. ६३,८६९ करोड पेक्षा अधिक पतपुरवठा केलेला आहे.

खेड्यातील रहिवासी असलेल्या अशाच एका महत्वाकांक्षी कर्जदार अनिता अहिरवार यांची कथा ही ग्रामीण भारतातील परिस्थितीचे, जेथे अधिकाधिक महिला स्वतःच्या पायावर उभ्या राहून अग्रेसर होत आहेत आणि आणि इतरांसाठी प्रेरणास्थान आणि आदर्श बनत आहेत, द्योतक आहे. अनिता यांच्या कुटुंबाची आर्थिक स्थिती खूपच दयनीय होती; अगदी घरातील मुलभूत गरजा भागविण्याइतपत देखील पुरेसे उत्पन्न नव्हते. परंतु ES-F या लघु वित्तीय बँकेच्या मदतीने तिने फूलशेती व्यवसायास सुरुवात केली आणि काही एकरजमीन जिथे तिने झेंडू, जरबेरा, अस्टर इत्यादींची लागवड केली ती तिने ठोक आणि किरकोळ विक्रेत्यांना भाड्याने दिली. अनिता गेल्या दहा वर्षांपासून एड-क्रया लघु वित्तीयबँकेची निगडीत असून त्या काळात त्यांच्या कुटुंबाची आर्थिक स्थिती केवळ सुधारलीच नाही तर या बँकेच्या सहकार्याने सुरू असलेल्या व्यवसायातून मिळणाऱ्या

नफ्यातून अनिता स्वतःचे घर आणि जमीन खरेदी करू पाहत आहेत.

अनिता म्हणते, मला आनंद वाटतो की माझी मुले एका चांगल्या शाळेत जात आहेत आणि त्यांच्या महत्वाच्या गरजांची पूर्तता करण्यास मी आज तमर्थ आहे. आज आम्हाला जे चांगले जीवन जगण्यास मिळते आहे त्याबद्दल मी एड-क्रयी ऋणी आहे.

अशीच महिला सबलीकरणाची कथा आहे आशा मनोहर सावंत यांची. रस्त्याच्या कडेला बसून भाजीपाला विकणे हे आशा यांचे उदरनिर्वाहाचे साधन होते. घाबुक मंडईतून भाजीपाला विकत घेण्यासाठी आशा यांना पांडयलाची, रोख रकमेची, आवश्यकता होती. दुर्दैवाने, आशा करीत असलेला व्यवसाय पारंपारिक आर्थिक संस्थांकडून कोणत्याही प्रकारचे रोखीचे कर्ज मिळण्यास पात्र ठरत नाही.

आशा यांनी प्रत्येक कर्जाचा उपयोग घाबुक किमतीत मोठ्या प्रमाणात भाजीपाला खरेदी करण्यासाठी चातुर्याने केला आणि त्यायोगे आशा यांचे व्यवसायातील केवळ उलाढालच नाही तर त्यातून मिळणार्या नफ्याचे प्रमाणही वाढले. मिळालेल्या नफ्यातून त्या आता रस्त्याच्या कडेला असलेला आपला व्यवसाय एका मोठ्या स्थायी जागेत स्थलांतरीत करण्याच्या विचारात आहेत. आशा यांचा व्यावसायिक विकास आणि महत्वाकांक्षा त्यांच्या सुधारलेल्या

जीवनमानातून दिसून येतो. भावी शिक्षित आयुष्याने भारलेल्या आशा यांनी आता आपल्या मुलीची शाळेत नोंदणी केलेली आहे.

आशा सांगतात, मला असे वाटायचे की मी कोणीच नाही आणि मला कर्ज मागण्याचा अधिकार नाही! आणि याचवेळी त्यांना स्वस्ती मायक्रोफायनान्स कडून प्रस्तावित संयुक्तदायित्व गटाना दिले जाणार्या कर्जा बद्दल माहिती मिळाली.^१ स्वस्तीने माझ्यावर, माझ्या क्षमतेवर आणि माझ्या व्यवसायाच्या कल्पनेवर दाखवलेला विश्वास यांमुळे मी स्वस्तीकडून कर्ज घेण्यास पात्र ठरले आणि हे सर्व करण्याची शक्ती मलायामुळेच मिळते आहे. कोणाचे दान नाही तर माझा अधिकार म्हणून मला अर्थसहाय्य मिळते आहे याचा मला अतिशय आनंद होतो आहे. हिच भावना अन्य १,८०,००० महिला ज्या स्वस्ती मायक्रोफायनान्स कडून जवळपास रु. ३८० करोड रकमेच्या कर्जपुरवठ्याने लाभान्वित झालेल्या आहेत त्यांनी व्यक्त केली.

महाराष्ट्रामध्ये २४ लाखापेक्षा जास्त महिला कर्जदारांनी मायक्रोफायनान्स कडून कर्ज घेतले असून बहुतांश महिला यशस्वी उद्योजक बनल्या आहेत. हे लक्षणीय आहे की, मायक्रोफायनान्स या महिला कर्जदारांचे जीवन उत्पन्नाचे उपक्रम सुरू करून त्यांना त्यांची स्वप्ने पूर्ण करण्याची संधी मिळाली आणि त्याचबरोबर त्यांचे जीवनमानही उंचावलेले.

Date	27 January, 2020
Publication	Kumarkranti
Edition	Kolhapur, Maharashtra
Page No.	3

मायक्रो फायनान्सने दिले आर्थिक स्वातंत्र्य

भारतात १९८० च्या दशकाच्या उत्तरार्धात पात्र नसलेल्या आणि अल्प उत्पन्न असलेल्या घटकांना उपलब्ध असलेले मत्पुरवठ्याचे औपचारिक स्त्रोत आणि होणारा कर्जपुरवठा यांतील तफावत लक्षात घेऊन मायक्रोफायनान्सची सुरुवात झाली. गैर-बँकिंग वित्तीय मंडळे मायक्रोफायनान्स संस्था अगदी आरंभापासूनच भारत सरकारचा आर्थिक समावेशकतेचा कार्यक्रम पुढे करून घालण्यामुळे आर्थिक समावेशकता वाढवण्याने काँग्रेसचा वेग घेतलेला आहे.

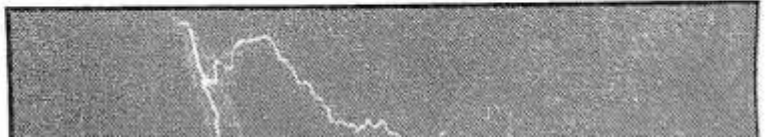
या क्षेत्रात यांशिवाय अन्य संस्था जसेकी बँका, लघु वित्तीय बँका, गैरबँकिंग मंडळे कार्यरत आहेत. हे त्यांचे प्रतिनिधित्व करणारी औद्योगिक संघटना आहे. हि संघटना साठी भारतीय रिझर्व बँक मान्यताप्राप्त स्व-नियामक मंडळ आहे. या मायक्रोफायनान्स संस्था सनाजातील अल्प उत्पन्न आणि आर्थिकदृष्ट्या वंचित घटक, ज्यांना एरवी

आर्थिक सेवा उपलब्ध नसतात, यांना जबाबदारीने आणि पारदर्शक पद्धतीने कर्जपुरवठा करतात.

भारतात छोटे व्यवसाय, विशिष्टतः जेमहिलांद्वारे चालविले जातात, अपयशी होण्याच्या अनेक कारणांपैकी एक महत्वाचे कारण म्हणजे अर्थपुरवठ्याचा अभाव हे होय. या उद्योगाने आपल्या कर्जदारांमध्ये स्वावलंबन आणि उद्योजकता या गुणांचा विकास होण्यासाठी बाजाराभिमुखता धोरण स्वीकारलेले आहे.

३० सप्टेंबर २०१९ पर्यंत संपूर्ण भारतात २.९८ करोड पेक्षा जास्त कर्जदारांना पतपुरवठा केला असून ए दर रु. ६३,८६९ करोड पेक्षा अधिक पतपुरवठा केलेला आहे. खेड्यातील रहिवासी

असलेल्या अशाच एका महत्वाकांक्षी कर्जदार अनिता अहिस्वार गांगी कथा ही ग्रामीण भारतातील परिस्थितीचे, जेथे अधिकाधिक महिला स्वतःच्या पायावर उभ्या राहून अगेसर होत आहेत आणि इतरांसाठी प्रेरणास्थान आणि आदर्श बनत आहेत, चोतक आहे. अनिता यांच्या कुटुंबाची आर्थिक स्थिती खूपच दयनीय होती; अगदी भरातील मुलभूत गरजा भागविण्या इतकत देखील पुरेसे उत्पन्न नसले परंतु या लघुवित्तीय बँकेच्या मदतीने तिने फूलशेती व्यवसायास सुरुवात केली आणि काही एकर जमीन जिथे तिने हॅंडू, जरबेरा, अस्टर इत्यादीची लागवड केली ती तिने ठोक आणि किरकोळ विक्रेत्यांना भाड्याने दिली.



Date	26 January, 2020
Publication	Krantisinh
Edition	Kolhapur, Maharashtra
Page No.	2

मायक्रोफायनान्सचा वंचित घटकांना आधार

भारतात १९८० च्या दशका च्या उत्तरार्धात पात्र नसलेल्या आणि अल्प उत्पन्न असलेल्या घटकांना उपलब्ध असलेले पतपुरवठा याचे औपचारिक स्त्रोत आणि होणारा कर्जपुरवठा यांतील तफावत लक्षात घेऊन मायक्रोफायनान्सची सुरुवात झाली. गैर-बँकिंग वित्तीय मंडळे - मायक्रोफायनान्स संस्था अगदी आरंभापासूनच भारत सरकारचा आर्थिक समावेश कतेचा कार्यक्रम पुढे करून चालल्यामुळे आर्थिक समावे शकता चळवळीने चांगलाच वेग घेतलेला आहे.

या क्षेत्रात NBFC-MFIs यांशिवाय अन्य संस्था जसे की बँका, लघु वित्तीय बँका, गैरबँकिंग मंडळे कार्यरत आहेत. MFIs हे त्यांचे प्रति निधित्व करणारी औद्योगिक संघटना आहे. हि संघटना NBFC-MFIs साठी भारतीय रिजर्व बँक मान्यताप्राप्त स्व-नियामक मंडळ आहे. या माय क्रोफायनान्स संस्था समाजा तील अल्प उत्पन्न आणि आर्थिकदृष्ट्या वंचित घटक, ज्यांना एरवी आर्थिक सेवा उपलब्ध नसतात, यांना जबाबदारीने आणि पारदर्शक पद्धतीने कर्जपुरवठा करतात.

भारतात छोटे व्यवसाय, विशेषतः जे महिलांद्वारे चालविले जातात, अपयशी होण्याच्या अनेक कारणांपैकी एक महत्वाचे कारण म्हणजे अर्धपुरवठ्याचा अभाव हे होय. या उद्योगाने आपल्या कर्जदारांमध्ये स्वावलंबन आणि उद्योजकता या गुणांचा विकास होण्यासाठी बाजारामुखता धोरण स्वीकारलेले आहे. NBFC-MFIs ने ३० सप्टेंबर २०१९ पर्यंत संपूर्ण भारतात २.९८ करोड पेक्षा जास्त कर्जदारांना पतपुरवठा केला असून एकंदर रु. ६३,८६९ करोड पेक्षा अधिक पतपुरवठा केलेला आहे.

खेड्यातील रहिवासी असलेल्या अशाच एका महत्वाकांक्षी कर्जदार अनिता अहिर वार यांची कथा ही ग्रामीण

भारतातील परिस्थितीचे, जेथे अधिकाधिक महिला स्वतःच्या पायावर उभ्या राहून अग्रेसर होत आहेत आणि आणि इतरांसाठी प्रेरणास्थान आणि आदर्श बनत आहेत, चोख आहे. अनिता यांच्या कुटुंबाची आर्थिक स्थिती खूपच दयनीय होती; अगदी घरातील मुलभूत गरजा मागविण्याइतपत देखील पुरेसे उत्पन्न नव्हते. परंतु एड-४ या लघु वित्तीय बँकेच्या मदतीने तिने फूलशेती व्यवसायास सुरुवात केली आणि काही एकर जमीन जिथे तिने झेंडू, जर्बेरा, अस्टर इत्यादीची लागवड केली ती तिने ठोक आणि किरकोळ विक्रेत्यांना भाड्याने दिली. अनिता गेल्या दहा वर्षांपासून एड-४ या लघु वित्तीय बँकेशी निगडित असून त्या काळात त्यांच्या कुटुंबाची आर्थिक स्थिती केवळ सुधारलीच नाही तर या बँकेच्या सहकार्याने सुरू असलेल्या व्यवसायातून मिळणाऱ्या नफ्यातून अनिता स्वतःचे घर आणि जमीन खरेदी करू पाहत आहेत.

अनिता म्हणते, मला आनंद वाटतो की माझी मुले एका चांगल्या शाळेत जात आहेत आणि त्यांच्या महत्त्वाच्या गरजांची पूर्तता करण्यास मी आज समर्थ आहे. आज आम्हाला जे चांगले जीवन जगण्यास मिळते आहे त्याबद्दल मी एड-४ ची ऋणी आहे.

अशीच महिला सबलीकरणाची कथा आहे आशा मनोहर सावंत यांची. रस्त्याच्या कडेला बसून भाजीपाला विकणे हे आशा यांचे उदरनिर्वाहाचे साधन होते. धावुक मंडईतून भाजी पाला विकत घेण्यासाठी आशा यांना भांडवलाची, रोख रकमेची, आवश्यकता होती. दुर्दैवाने, आशा करीत असलेला व्यवसाय पारंपारिक आर्थिक संस्थांकडून कोणत्याही प्रकारचे रोखीचे कर्ज मिळण्यास पात्र ठरत नाही.

आशा यांनी प्रत्येक कर्जाचा उपयोग धावुक किमतीत मोठ्या प्रमाणात भाजीपाला खरेदी करण्यासाठी चातुर्याने

केला आणि त्यायोगे आशा यांचे व्यवसायातील केवळ उलाढालच नाही तर त्यातून मिळणार्या नफ्याचे प्रमाणही वाढले. मिळालेल्या नफ्यातून त्या आता रस्त्याच्या कडेला असलेला आपला व्यवसाय एका मोठ्या स्थायी जागेत स्थलांतरीत करण्याच्या विचारात आहेत. आशा यांचा व्यावसायिक विकास आणि महत्वाकांक्षा त्यांच्या सुधारलेल्या जीवनमानातून दिसून येतो. भावी शिक्षित आमुष्णाने भारलेल्या आशा यांनी आता आपल्या मुलीची शाळेत नोंदणी केलेली आहे.

आशा सांगतात, मला असे वाटायचे की मी कोणीच नाही आणि मला कर्ज मागण्याचा अधिकार नाही! आणि याचवेळी त्यांना स्वस्ती मायक्रोफायनान्स कडून प्रस्तावित संयुक्त दायित्व गटांना दिले जाणार्या कर्जा बद्दल मीहिती मिळाली. स्वस्तीने माझ्यावर, माझ्या क्षमतेवर आणि माझ्या व्यावसायच्या कल्पनेवर दाखवलेला विश्वास यांमुळे मी स्वस्तीकडून कर्ज घेण्यास पात्र ठरले आणि हे सर्व करण्याची शक्ती मलायामुळेच मिळते आहे. कोणाचे दान नाही तर माझा अधिकार म्हणून मला अर्थसाहाय्य मिळते आहे याचा मला अतिशय आनंद होतो आहे. हिच भावना अन्ध १,८०,००० महिला ज्या स्वस्ती मायक्रोफायनान्स कडून जवळपास रु. ३८० करोड रकमेच्या कर्जपुरवठ्याने लाभान्वित झालेल्या आहेत त्यांनी व्यक्त केली.

महाराष्ट्रामध्ये २४ लाखापेक्षा जास्त महिला कर्जदारांनी मायक्रोफायनान्स कडून कर्ज घेतले असून बहुतांश महिला यशस्वी उद्योजक बनल्या आहेत. हे लक्षणीय आहे की, मायक्रोफायनान्स या महिला कर्जदारांचे जीवन उत्पन्नाचे उत्पन्न सुरू करून त्यांनी स्वप्ने पूर्ण करण्याची संधी मिळाली व त्याच बरोबर त्यांचे जीवनमानही उंचावले गेले.

Date	1 January, 2020
Publication	Navbharat
Edition	Indore, Madhya Pradesh
Page No.	9

वित्तीय समावेश के लिए बहुत जरूरी है माइक्रोफाइनेंस

पिछले दो दशकों से माइक्रोफाइनेंस वित्तीय समावेश को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन बन कर उभरा है, जो कि सरकार का एक प्रमुख उद्देश्य है। एमएफआईएन में हम अपने उद्योग संघ के रूप में एनबीएफसी, एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस लघु वित्त, बैंक, एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं को दर्शाते हैं। एमएफआईएन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा एनबीएफसी एमएफआई के लिए मान्यता प्राप्त सेल्फरेग्युलेटरी बॉडी स्व.नियामक निकाय है। ये माइक्रोफाइनेंस संस्थाएं कम आय वाले लोगों को तथा आबादी के वित्तीय रूप से वर्जित समूह को लोन प्रदान करती हैं, जिनकी अन्यथा वित्तीय सेवाएं तक पहुँच नहीं होती है। जैसा कि आरबीआई द्वारा इसे अनिवार्य किया गया है बिना किसी कोलैटरल के यह आय.उत्पादक लोन महत्वपूर्ण तौर पर आकार में काफी छोटे होते हैं। माइक्रोफाइनेंस की भूमिका पर बात करते हुए, हर्ष श्रीवास्तव, सीईओ.एफ एफआईएन कहते हैं माइक्रोफाइनेंस की उत्पत्ति का सबसे प्रमुख कारण भारत में एक ऐसी बढ़ी आबादी का मौजूद होना था जिनके पास न बैंक थे और न कोई वित्तीय सेवाएं। देश की विशालता और निम्न आय वाले परिवारों को लोन प्रदान करने में असमर्थता के कारण भारत सरकार ने वित्तीय समावेश को सुनिश्चित करने के लिए माइक्रोफाइनेंस को एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में मान्यता दी। माइक्रोफाइनेंस प्रदान करने में सक्षम होने के लिए एनबीएफसी, एमएफआई कहलाने वाले माइक्रोफाइनेंस संस्थान को भारतीय रिजर्व बैंक, आरबीआई के साथ पंजीकृत होना जरूरी है। बहुत ही कड़ाई से विनियमित ये संस्थान लोन देने के लिए आरबीआई द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों और नीतियों का पालन करते हैं, और इनकी निगरानी तीन अलग-अलग स्तरों पर की जाती है, अर्थात् कंपनी एसआरओ और आरबीआई के स्तर पर।

Date	1 January, 2020
Publication	Raj Express
Edition	Indore, Madhya Pradesh
Page No.	12

वित्तीय समावेश के लिए जरूरी है माइक्रोफाइनेंस

मुंबई। पिछले दो दशकों से माइक्रोफाइनेंस वित्तीय समावेश को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन बन कर उभरा है, जो सरकार का एक प्रमुख उद्देश्य है। एमएफआईएन में अपने उद्योग संघ के रूप में एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक, एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं को दर्शाते हैं। एमएफआईएन आरबीआई द्वारा मान्यता प्राप्त सेल्फ रेग्युलेटरी बॉडी है। ये माइक्रोफाइनेंस संस्थाएं कम आय वाले लोगों को तथा आबादी के वित्तीय रूप से वर्जित समूह को लोन प्रदान करती हैं, जिनकी अन्यथा वित्तीय सेवाएं तक पहुंच नहीं होती हैं। हर्ष श्रीवास्तव, सीईओ एफएफआईएन कहते हैं, माइक्रोफाइनेंस की उत्पत्ति का सबसे प्रमुख कारण भारत में एक ऐसी बड़ी आबादी का मौजूद होना था जिनके पास न बैंक थे और न कोई वित्तीय सेवाएं। मध्यप्रदेश में लगभग 22.7 लाख महिला ऋणी हैं जिन्होंने इस राशि को विभिन्न व्यवसायों में निवेश किया है, जैसे सब्जी की दुकान, सिलाई आदि। हम गर्व महसूस करते हैं कि माइक्रोफाइनेंस के माध्यम से ये महिलाएं न केवल अधिक आय उत्पन्न करने में सक्षम हुई हैं, बल्कि दूसरों को भी रोजगार प्रदान कर रही हैं। इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि जो महिलाएं वर्तमान में लोन ले रही हैं, वे क्रेडिट अनुशासन का पालन करें ताकि भविष्य में लोन प्राप्त करने की उनकी गारंटी बनी रहे।

Date	2 January, 2020
Publication	Digital India
Edition	Jabalpur, MP
Page No.	4

वित्तीय समावेश के लिए बहुत जरूरी है माइक्रो फाइनेंस

जबलपुर। एमएफआईएन में हम अपने उद्योग संघ के रूप में एन बीएफ सी.एम एफ आई बैंक स्मॉल फाइनेंस लघु वित्त बैंक एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं को दर्शाते हैं। एमएफआईएन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा एन बी एफ सी.एम एफ आई के लिए मान्यता प्राप्त सेल्फ रेग्युलेटरी बॉडी स्व. नियामक निकाय है। ये माइक्रो फाइनेंस संस्थाएं कम आय वाले लोगों को तथा आबादी के वित्तीय रूप से वंचित समूह को लोन प्रदान करती हैं। जिनकी अन्यथा वित्तीय सेवाएं तक पहुंच नहीं होती है। जैसा कि आरबीआई द्वारा इसे अनिवार्य किया गया है। माइक्रो फाइनेंस की भूमिका पर बात करते हुए हर्ष श्रीवास्तव, सीईओ.एफएफआईएनए कहते हैं माइक्रोफाइनेंस की उत्पत्ति का सबसे प्रमुख कारण भारत

में एक ऐसी बड़ी आबादी का मौजूद होना था जिनके पास न बैंक थे और न कोई वित्तीय सेवाएं। देश की विशालता और निम्न आय वाले परिवारों को लोन प्रदान करने में असमर्थता के कारण भारत सरकार ने वित्तीय समावेश को सुनिश्चित करने के लिए माइक्रो फाइनेंस को एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में मान्यता दी। माइक्रो फाइनेंस प्रदान करने में सक्षम होने के लिए एनबीएफसी-एमएफआई कहलाने वाले माइक्रोफाइनेंस संस्थान को भारतीय रिजर्व बैंक आरबीआई के साथ पंजीकृत होना जरूरी है। श्रीवास्तव ने आगे कहा मध्यप्रदेश में लगभग 22.7 लाख महिला ऋणी हैं जिन्होंने इस राशि को विभिन्न व्यवसायों में निवेश किया है जैसे सब्जी की दुकानएं सिलाई इत्यादि। एनबीएफसी-एमएफआईए

एमएफआईएन के साथ-साथ आरबीआई के पास भी हेल्पलाइन हैं जिनका उपयोग किसी भी लोन लेने वाले के द्वारा अपनी किसी भी शिकायत को दर्ज करने तथा इसकी जांच करने के लिए किया जा सकता है। 30 सितंबर 2019 की स्थिति में कुल लोन पोर्टफोलियो जीएलपी बकाया 2,01,724 करोड़ रुपये रही जो 50 मिलियन से अधिक अंतिम ग्राहकों को सेवा दे रहा है। जिनमें से 99 से अधिक महिलाएं हैं। इस प्रकार माइक्रो फाइनेंस ने न केवल ग्रामीण परिवारों को स्थायी आजीविका विकसित करने में मदद की है बल्कि इसने एकांत जिलों को देश के आर्थिक विकास में शामिल करने के लिए भी वित्तीय साक्षरता और टेक्नोलॉजी तकनीक का उपयोग किया है।

Date	2 January, 2020
Publication	Hindi Express
Edition	Indore, MP
Page No.	4

वित्तीय समावेश के लिए बहुत जरूरी है माइक्रोफाइनेंस

मुम्बई, नि.सं.। पिछले दो दशकों से माइक्रोफाइनेंस वित्तीय समावेश को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन बन कर उभरा है, जो कि सरकार का एक प्रमुख उद्देश्य है।

एमएफआईएन में, हम अपने उद्योग संघ के रूप में एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस (लघु वित्त) बैंक, एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं को दर्शाते हैं। एमएफआईएन, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा एनबीएफसी-एमएफआई के लिए मान्यताप्राप्त सेल्फ-रेग्युलेटरी बॉडी (स्व-नियामक निकाय) है। ये माइक्रोफाइनेंस संस्थाएं कम आय वाले लोगों को, तथा आबादी के वित्तीय रूप से वर्जित समूह को लोन प्रदान करती हैं, जिनको अन्यथा वित्तीय सेवाएं तक पहुँच नहीं होती

है। जैसा कि आरबीआई द्वारा इसे अनिवार्य किया गया है, बिना किसी कोलैटरल के यह आय-उत्पादक लोन, महत्वपूर्ण तौर पर आकार में काफी छोटे होते हैं।



माइक्रोफाइनेंस की भूमिका पर बात करते हुए, हर्ष श्रीवास्तव, सीईओ-एफएफआईएन, कहते हैं, “माइक्रोफाइनेंस की उत्पत्ति का सबसे प्रमुख कारण भारत में एक ऐसी बड़ी आबादी का मौजूद होना था जिनके पास न बैंक थे और न कोई वित्तीय सेवाएं। देश की विशालता और निम्न आय वाले

परिवारों को लोन प्रदान करने में असमर्थता के कारण, भारत सरकार ने वित्तीय समावेश को सुनिश्चित करने के लिए माइक्रोफाइनेंस को एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में मान्यता दी। माइक्रोफाइनेंस प्रदान करने में सक्षम होने के लिए एनबीएफसी-एमएफआई कहलाने वाले माइक्रोफाइनेंस संस्थान को भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के साथ पंजीकृत होना जरूरी है। बहुत ही कड़ाई से विनियमित ये संस्थान लोन देने के लिए आरबीआई द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों और नीतियों का पालन करते हैं, और इनकी निगरानी तीन अलग-अलग स्तरों पर की जाती है, अर्थात् कंपनी, एसआरओ और आरबीआई के स्तर पर।”

Date	2 January, 2020
Publication	Pradesh Watch
Edition	Jabalpur, MP
Page No.	2

वित्तीय समावेश के लिए बहुत जरूरी है माइक्रोफाइनेंस

जबलपुर, संवाददाता। पिछले दो दशकों से माइक्रोफाइनेंस वित्तीय समावेश को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन बन कर उभरा है, जो कि सरकार का एक प्रमुख उद्देश्य है। एमएफआईएन में, हम अपने उद्योग संघ के रूप में एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस (लघु वित्त) बैंक, एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं को दर्शाते हैं। एमएफआईएन, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा एनबीएफसी-एमएफआई के लिए मान्यताप्राप्त सेल्फ-रेग्युलेटरी बॉडी (स्व-नियामक निकाय) है। ये माइक्रोफाइनेंस संस्थाएं कम आय वाले लोगों को, तथा आबादी के वित्तीय रूप से वर्जित समूह को लोन प्रदान करती हैं, जिनकी अन्यथा वित्तीय सेवाएं तक पहुँच नहीं होती है। जैसा कि आरबीआई द्वारा इसे अनिवार्य किया गया है, बिना किसी कोलैटरल के यह आय-उत्पादक लोन, महत्वपूर्ण तौर पर आकार में काफी छोटे होते हैं। माइक्रोफाइनेंस की भूमिका पर बात करते हुए, हर्ष श्रीवास्तव, सीईओ-एमएफआईएन, कहते हैं, “माइक्रोफाइनेंस की उत्पत्ति का सबसे प्रमुख कारण भारत में एक ऐसी बड़ी आबादी का मौजूद होना था जिनके पास न बैंक थे और न कोई वित्तीय सेवाएं। देश की विशालता और निम्न आय वाले परिवारों को लोन प्रदान करने में असमर्थता के कारण, भारत सरकार ने वित्तीय समावेश को सुनिश्चित करने के लिए माइक्रोफाइनेंस को एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में मान्यता दी। माइक्रोफाइनेंस प्रदान करने में सक्षम होने के लिए एनबीएफसी-एमएफआई कहलाने वाले माइक्रोफाइनेंस संस्थान को भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) के साथ पंजीकृत होना जरूरी है।

Date	2 January, 2020
Publication	Swatantra Mat
Edition	Bhopal, MP
Page No.	10

वित्तीय समावेश के लिए बहुत जरूरी है माइक्रोफाइनेंस

भोपाल ।

पिछले दो दशकों से माइक्रोफाइनेंस वित्तीय समावेश को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन बन कर उभरा जो कि सरकार का एक प्रमुख उद्देश्य है। एमएफआईएन में हम अपने उद्योग संघ के रूप में एनबीएफसी, एमएफआईए बैंक स्मॉल फाइनेंस ;लघु वित्त बैंक एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं को दर्शाते हैं। एमएफआईएनए भारतीय रिज़र्व

बैंक द्वारा एनबीएफसी, एमएफआई के लिए मान्यताप्राप्त सेल्फ, रेग्युलेटरी बॉडी ;स्व.नियामक निकायद्ध है। ये माइक्रोफाइनेंस संस्थाएं कम आय वाले लोगों कोए तथा आबादी के वित्तीय रूप से वर्जित समूह को लोन प्रदान करती हैं जिनकी अन्यथा वित्तीय सेवाएं तक पहुँच नहीं होती है। जैसा कि आरबीआई द्वारा इसे अनिवार्य किया गया हैए बिना किसी कोलैटरल के यह आय.उत्पादक लोन महत्वपूर्ण तौर पर आकार में काफी छोटे होते हैं।

Date	3 January, 2020
Publication	Agniban
Edition	Indore, Madhya Pradesh
Page No.	9

वित्तीय समावेश के लिए बहुत जरूरी है माइक्रोफाइनेंस

एजेंसी। पिछले दो दशकों से माइक्रोफाइनेंस वित्तीय समावेश को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन बन कर उभरा है, जो कि सरकार का एक प्रमुख उद्देश्य है। एमएफआईएन में, हम अपने उद्योग संघ के रूप में एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस (लघु वित्त) बैंक, एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं को दर्शाते हैं। एमएफआईएन, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा एनबीएफसी-एमएफआई के लिए मान्यताप्राप्त सेल्फ-रेग्यूलेटरी बॉडी (स्व-नियामक निकाय) है। ये माइक्रोफाइनेंस संस्थाएं कम आय वाले लोगों को, तथा आबादी के वित्तीय रूप से वर्जित समूह को लोन प्रदान करती हैं, जिनकी अन्यथा वित्तीय सेवाएं तक पहुँच नहीं होती है।

Date	3 January, 2020
Publication	Jaylok
Edition	Indore, Madhya Pradesh
Page No.	6

वित्तीय समावेश के लिए बहुत जरूरी है माइक्रोफाइनेंस

(एस) पिछले दो दशकों से माइक्रोफाइनेंस वित्तीय समावेश को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन बन कर उभरा है, जो कि सरकार का एक प्रमुख उद्देश्य है। एमएफआईएन में, हम अपने उद्योग संघ के रूप में एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस (लघु वित्त) बैंक, एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं को दर्शाते हैं। एमएफआईएन, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा एनबीएफसी-एमएफआई के लिए मान्यताप्राप्त सेल्फ-रेग्युलेटरी बॉडी (स्व-नियामक निकाय) है। ये माइक्रोफाइनेंस संस्थाएं कम आय वाले लोगों को, तथा आबादी के वित्तीय रूप से वर्जित समूह को लोन प्रदान करती हैं, जिनकी अन्यथा वित्तीय सेवाएं तक पहुँच नहीं होती हैं। जैसा कि आरबीआई द्वारा इसे अनिवार्य किया गया है, बिना किसी कोलैटरल के यह आय-उत्पादक लोन, महत्वपूर्ण तौर पर आकार में काफी छोटे होते हैं। माइक्रोफाइनेंस की भूमिका पर बात करते हुए, हर्ष श्रीवास्तव, सीईओ-एफएफआईएन, कहते हैं, “माइक्रोफाइनेंस की उत्पत्ति का सबसे प्रमुख कारण भारत में एक ऐसी बड़ी आबादी का मौजूद होना था जिनके पास न बैंक थे और न कोई वित्तीय सेवाएं। देश की विशालता और निम्न आय वाले परिवारों को लोन प्रदान करने में असमर्थता के कारण, भारत सरकार ने वित्तीय समावेश को सुनिश्चित करने के लिए माइक्रोफाइनेंस को एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में मान्यता दी।

Date	9 January, 2020
Publication	Dainik Jagran
Edition	Indore, Madhya Pradesh
Page No.	9

वित्तीय समावेश के लिए बहुत जरूरी है माइक्रोफाइनेंस

मुंबई, जेएनएन। पिछले दो दशकों से माइक्रोफाइनेंस वित्तीय समावेश को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन बन कर उभरा है, जो कि सरकार का एक प्रमुख उद्देश्य है। एमएफआईएन में, हम अपने उद्योग संघ के रूप में एनबीएफसी-एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस (लघु वित्त) बैंक, एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं को दर्शाते हैं। एमएफआईएन, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा एनबीएफसी-एमएफआई के लिए मान्यता प्राप्त सेल्फ-रेग्युलेटरी बॉडी (स्व-नियामक निकाय) है। ये माइक्रोफाइनेंस संस्थाएं कम आय वाले लोगों को, तथा आबादी के वित्तीय रूप से वर्जित समूह को लोन प्रदान करती हैं, जिनकी अन्यथा वित्तीय सेवाएं तक पहुंच नहीं होती है। जैसा कि आरबीआई द्वारा इसे अनिवार्य किया गया है, बिना किसी कोलैटरल के यह आय-उत्पादक लोन, महत्वपूर्ण तौर पर आकार में काफी छोटे होते हैं।

Date	10 January, 2020
Publication	Navbharat
Edition	Mandla, Madhya Pradesh
Page No.	10

वित्तीय समावेश के लिए बहुत जरूरी है माइक्रोफाइनेंस

मंडला। पिछले दो दशकों से माइक्रोफाइनेंस वित्तीय समावेश को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन बन कर उभरा है, जो कि सरकार का एक प्रमुख उद्देश्य है। एमएफआईएन में हम अपने उद्योग संघ के रूप में एनबीएफसी, एमएफआई, बैंक, स्मॉल फाइनेंस लघु वित्त, बैंक, एनबीएफसी सहित विभिन्न संस्थाओं को दर्शाते हैं।

एमएफआईएन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा एनबीएफसी एमएफआई के लिए मान्यता प्राप्त सेल्फरेग्युलेटरी बॉडी स्व.नियामक निकाय है। ये माइक्रोफाइनेंस संस्थाएं कम आय वाले लोगों को ए तथा आबादी के वित्तीय रूप से वर्जित समूह को लोन प्रदान करती हैं, जिनकी अन्यथा वित्तीय सेवाएं तक पहुंच नहीं होती हैं। जैसा कि आरबीआई द्वारा इसे अनिवार्य किया गया है ए बिना किसी कोलैटरल के यह आय.उत्पादक लोनएं महत्वपूर्ण तौर पर आकार में काफी छोटे होते हैं। माइक्रोफाइनेंस की भूमिका पर बात करते हुए, हर्ष श्रीवास्तव, सीईओ.एफएफआईएन कहते हैं माइक्रोफाइनेंस की उत्पत्ति का सबसे प्रमुख कारण भारत में एक ऐसी बड़ी आबादी का मौजूद होना था जिनके पास न बैंक थे और न कोई वित्तीय सेवाएं। देश की विशालता और निम्न आय वाले परिवारों को लोन प्रदान करने में असमर्थता के कारण भारत सरकार ने वित्तीय समावेश को सुनिश्चित करने के लिए माइक्रोफाइनेंस को एक महत्वपूर्ण साधन

के रूप में मान्यता दी। माइक्रोफाइनेंस प्रदान करने में सक्षम होने के लिए एनबीएफसी, एमएफआई कहलाने वाले माइक्रोफाइनेंस संस्थान को भारतीय रिजर्व बैंक, आरबीआई के साथ पंजीकृत होना जरूरी है। बहुत ही कड़ाई से विनियमित ये संस्थान लोन देने के लिए आरबीआई द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों और नीतियों का पालन करते हैं, और इनकी निगरानी तीन अलग-अलग स्तरों पर की जाती है, अर्थात् कंपनी एसआरओ और आरबीआई के स्तर पर।

श्री श्रीवास्तव ने आगे कहा मध्यप्रदेश में लगभग 22.7 लाख महिला ऋणी हैं जिन्होंने इस राशि को विभिन्न व्यवसायों में निवेश किया है जैसे सब्जी की दुकानएं सिलाई इत्यादि। हम गर्व महसूस करते हैं कि माइक्रोफाइनेंस के माध्यम से ये महिलाएं न केवल अधिक आय उत्पन्न करने में सक्षम हुई हैं बल्कि दूसरों को भी रोजगार प्रदान कर रही हैं। इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि जो महिलाएं वर्तमान में लोन ले रही हैं वे क्रेडिट अनुशासन का पालन करें और समय पर संस्थानों को लोन चुकाना सुनिश्चित करें ताकि क्रेडिट ब्यूरो के साथ उनके रिकॉर्ड साफसुथरे रहें और भविष्य में लोन प्राप्त करने की उनकी गारंटी बनी रहे।

वास्तव में चिट फंड और पैसे उधार देने के तौर पर वित्तीय मदद के पारंपरिक असंगठित तरीकों की तुलना में सभी एनबीएफसी एमएफआई आरबीआई के साथ

पंजीकृत तथा विनियमित होते हैं। आज भी, वित्त व्यवस्था का यह असंगठित रूप यद्यपि लगातार कम होता जा रहा है। ग्रामीण जीवन को प्रभावित कर रहा है। ग्राहक की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध आरबीआई के प्रेमवर्क रूपरेखा में लोन के मूल्य निर्धारण पर नियम और उधारी के लिए उचित व्यवहार आते हैं, जिसमें ब्याज दरों में पारदर्शिताएं कई बार लोनएं अत्यधिक लोन आदि शामिल हैं। लोन लेने वाले के लिए लोन अनुशासन सुनिश्चित करना बहुत ही जरूरी है जैसा कि क्रेडिट ब्यूरो द्वारा निर्धारित किया गया है और ये अन्य क्रेडिट सुविधाओं के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। एनबीएफसी, एमएफआईएन एमएफआईएन के साथ साथ आरबीआई के पास भी हेल्पलाइन हैं जिनका उपयोग किसी भी लोन लेने वाले के द्वारा अपनी किसी भी शिकायत को दर्ज करने तथा इसकी जाँच करने के लिए किया जा सकता है। वृद्धि दर्ज की जिसमें 30 सितंबर 2019 की स्थिति में कुल लोन पोर्टफोलियो जीएलपी बकाया 2,01,724 करोड़ रुपये रही जो 50 मिलियन से अधिक अंतिम ग्राहकों को सेवा दे रहा है, जिनमें से 99: से अधिक महिलाएं हैं। इस प्रकार ए माइक्रोफाइनेंस ने न केवल ग्रामीण परिवारों को स्थायी आजीविका विकसित करने में मदद की है, बल्कि इसने एकांत जिलों को देश के आर्थिक विकास में शामिल करने के लिए भी वित्तीय साक्षरता और टेक्नोलॉजी तकनीक का उपयोग किया है।